Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 40 • 07 जुलाई - 13 जुलाई, 2025 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 05-07-2025 • पेज 20 • ₹ 10 रुपये

जे सूर करें पचखांण, ते एक धारा रहे।
त्यां जीतब जनम सुधारियो।।

शूरवीर आदमी जो संकल्प करता है उसे एकधार निभाता है। उसका जीवन धन्य हो जाता है।

– आचार्यश्री भिक्षु

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य अनुशास्ता आचार्य श्री भिक्षु की जन्म त्रिशताब्दी के प्रांजल अवसर पर सादर अभिवंदना

चिंतामणि ओ रतन मिल्यो,
किण विध करां बखाण।
भिक्षु रे परताप स्यूं,
पास्यां शिव पुर ठाम।

जन्म शताब्दी तीसरी,
प्रभु री कृपा अपार,
स्वामीजी रे नाम स्यूं,
शांत हुवे अंगार।।

श्रद्धाप्रणत : अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 जुलाई - 13 जुलाई, 2025

प्राणी-जगत के साथ है हमारा सहयोगात्मक संबंध : आचार्यश्री महाश्रमण

शाहीबाग में पधारे तेरापंथ के सरताज आचार्यश्री महाश्रमण

शाहीबाग, अहमदाबाद।
27 जून, 2025

वर्धमान के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी का लगभग नौ किलोमीटर का विहार कर सप्तदिवसीय प्रवास हेतु अहमदाबाद के शाहीबाग स्थित तेरापंथ भवन में पावन पदार्पण हुआ। मंगल पाथेय प्रदान करते हुए महातपस्वी ने फरमाया कि इस दुनिया में दो चीजें हैं – एक जीव और दूसरी अजीव। जीव और अजीव के सिवाय इस पूरी सृष्टि में और कुछ भी नहीं है। कहीं-कहीं हम जीव-अजीव का मिश्रित रूप भी देख सकते हैं। जैसे मनुष्य में आत्मा चेतन है, पर शरीर पुद्गल है।

सिद्ध भगवान विशुद्ध जीव आत्माएं हैं। कई द्रव्य बिल्कुल अजीव हैं, जैसे धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल और पुद्गल। प्राणी शरीर और आत्मा दोनों से युक्त होता है। वह जीव-अजीव का मिला-जुला रूप है। मनुष्य पुद्गलों का बहुत उपयोग करता है। धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय से सहयोग प्राप्त होता है, पर ये दिखाई नहीं देते। पुद्गल तो दिखाई देते हैं।

हमारा प्राणी-जगत के साथ सहयोगात्मक संबंध भी है। आचार्य उमास्वाति ने कहा है - 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्।' तत्वार्थ सूत्र दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों परंपराओं में लगभग मान्य है। आगमों में यह सम्मति नहीं है, पर णमोकार मंत्र, भक्तामर और तत्वार्थ सूत्र दोनों परंपराओं में मान्य हैं।

जैन दर्शन का मुख्य सिद्धांत है षट् द्रव्य वाद। छह द्रव्यों से यह सृष्टि बनी है। धर्मास्तिकाय गति में, अधर्मास्तिकाय स्थिर रखने में और आकाशास्तिकाय स्थान देने में सहयोगी होते हैं। काल से हमें समय प्राप्त होता है। पुद्गलास्तिकाय भी हमारे बहुत काम आता है। छठा द्रव्य — जीवास्तिकाय — दूसरों को सहयोग नहीं करता, पर जीव एक-दूसरे को परस्पर सहयोग देते हैं। यह पारस्परिकता है।

व्यक्ति में स्वावलंबिता हो — 'कम से कम लो, अधिक से अधिक दो सेवा-धर्म विचार, रखो सभी के साथ में प्रतिपल शिष्टाचार।' शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श – ये पुद्गल हैं, और हमारे रागभाव के निमित्त बन सकते हैं। ये काम शल्य हैं, विष हैं, मारक हैं, आशीविष सर्प के समान हैं। ऊपर से पदार्थों का उपयोग नहीं करता, पर भीतर में कामना है – यह भी शल्य है।

चातुर्मास का समय निकट है। आज शाहीबाग तेरापंथ भवन में आए हैं। चातुर्मास त्याग-तपस्या का समय है। इस बार आचार्य भिक्षु का 300वां जन्मदिवस आ रहा है – त्रिशताब्दी का समय है। जितना हो सके तपस्या करें। एक-एक कदम आगे बढ़ें। आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी से पदार्थों का त्याग करने का प्रयास करें।

पूज्यवर ने आगे फरमाया कि यहाँ कई संतों से मिलना हो गया है। साध्वियों-समणियों से भी भेंट हुई है। अनौपचारिक रूप से यह वर्धमान महोत्सव जैसा बन गया है। सभी का स्वास्थ्य अनुकूल रहे, अच्छी धर्माराधना चलती रहे – ऐसी मंगलकामना।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने मंगल उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि आचार्य प्रवर अनेक प्रांतों को पवित्र करते हुए गुजरात में दूसरा चातुर्मास करने पधारे हैं। हमने गुजरात की सभ्यता और संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन और गुजराती लोगों की श्रद्धा और भक्ति को देखा। इनके रोम-रोम में श्रद्धा है। गुरु के प्रति आकर्षण और भक्ति है।कच्छ की यात्रा तेरापंथ की प्रभावना को बढ़ाने वाली यात्रा सिद्ध हुई। ऐसा प्रतीत होता था मानो आचार्यवर संपूर्ण जैन समाज के आचार्य हैं। गुरुदेव भी उन्हें वात्सल्य और प्रेरणाएं प्रदान करते थे। आचार्यवर एक सम्राट हैं, जो सभी को सब कुछ दे रहे हैं।

पूज्यवर के स्वागत में सभाध्यक्ष अर्जुनलाल बाफणा, तेरापंथ सेवा समाज ट्रस्ट अध्यक्ष सज्जन सिंघवी, टीपीएफ अध्यक्ष जागृत संकलेचा ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। भिक्षु भजन मण्डल, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मण्डल ने पृथक्-पृथक् गीत का संगान किया। अहमदाबाद चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति की ओर से नानालाल कोठारी व सागर सदन की ओर से अरविंद दूगड़ ने अपनी अभिव्यक्ति दी। अहमदाबाद ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

राग-द्वेष को प्रतनु करने से होता है गुणस्थानों में विकास : आचार्यश्री महाश्रमण

शाहीबाग, अहमदाबाद।
30 जून, 2025

सप्त दिवसीय शाहीबाग प्रवास का चतुर्थ दिवस। तेरापंथ सम्राट आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी अमृत देशना में फरमाया कि आदमी और प्राणी के भीतर दो वृत्तियाँ होती हैं — राग और द्वेष। जब तक वीतरागता प्राप्त नहीं होती, तब तक राग-द्वेष विद्यमान रहते हैं।

तात्त्विक दृष्टि से भी बात करें तो ग्यारहवें गुणस्थान में राग-द्वेष उदय स्थिति में तो नहीं रहते, किन्तु भीतर में उनकी सत्ता बनी रहती है। बारहवां गुणस्थान प्राप्त होने पर राग-द्वेष पूर्णतया निर्मूल हो जाते हैं— वहाँ उनका कोई भी अंश शेष नहीं रहता।

ग्यारहवां गुणस्थान कोई बहुत स्थायी अवस्था नहीं है — वह थोड़े समय का होता है। उसके पश्चात मोह का पुनः उदय होता ही है। जैसे बंद गली में लौटना ही पड़ता है, वैसे ही ग्यारहवें गुणस्थान में ठहराव संभव नहीं — वहाँ से अधःपतन अवश्य होता है।

अष्टम गुणस्थान से दो मार्ग-श्रेणियाँ निकलती हैं — उपशम श्रेणी और क्षपक श्रेणी। उपशम श्रेणी वाला आठवें से नौवें, फिर दसवें और ग्यारहवें गुणस्थान तक पहुँच सकता है, लेकिन उसके बाद उसका अधःपतन होता है। जबकि क्षपक श्रेणी वाला आठवें, नौवें, दसवें से सीधे बारहवें गुणस्थान तक पहुँचता है — वह ग्यारहवें का स्पर्श भी नहीं करता। बारहवें गुणस्थान में पहुँचने के बाद अधःपतन की कोई संभावना नहीं होती — यह एक अमर अवस्था है। तीसरा, बारहवाँ और तेरहवाँ गुणस्थान 'अमर गुणस्थान' माने जाते हैं — जब तक जीव इन गुणस्थानों में होता है, उसकी मृत्यु नहीं हो सकती। बारहवां गुणस्थान अल्पकालिक होता है, जबकि तेरहवें गुणस्थान में केवलज्ञान हो जाने के कारण कुछ दीर्घकाल तक अवस्थान संभव है। चौदहवाँ गुणस्थान अत्यंत अल्पकालिक होता है।

राग-द्वेष को कर्मों का बीज कहा गया है। इनसे जीव को पाप कर्मों का बंध होता है। राग-द्वेष के कारण आदमी ही आदमी पापाचार की प्रवृत्तियों में चला जाता है। राग-द्वेष के कारण ही सभी प्रकार के कर्मों के बंध जीव को होते हैं। राग-द्वेष से मुक्ति पाने के लिए आदमी को समता की साधना करने का प्रयास होना चाहिए। आदमी के मन में कभी राग आता है तो कभी द्वेष का भाव जागृत होता है।

(शेष पेज 18 पर)

अष्टम गुणस्थान से दो मार्ग-श्रेणियाँ निकलती हैं

उपशम श्रेणी और क्षपक श्रेणी। उपशम श्रेणी वाला आठवें से नौवें, फिर दसवें और ग्यारहवें गुणस्थान तक पहुँच सकता है, लेकिन उसके बाद उसका अधःपतन होता है। जबकि क्षपक श्रेणी वाला आठवें, नौवें, दसवें से सीधे बारहवें गुणस्थान तक पहुँचता है — वह ग्यारहवें का स्पर्श भी नहीं करता। बारहवें गुणस्थान में पहुँचने के बाद अधःपतन की कोई संभावना नहीं होती — यह एक अमर अवस्था है।

विकसित हो शांति और क्षमा की साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

शाहीबाग, अहमदाबाद।
29 जून, 2025

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने शाहीबाग स्थित तेरापंथ भवन में मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि कषाय वह तत्व है, जिसके द्वारा पाप कर्म का आगमन होता है। कषाय के चार प्रकार हैं — क्रोध, मान, माया और लोभ।

गुस्सा प्रीति का नाश करने वाला होता है। गुस्सा आवेश के रूप में नहीं आना चाहिए। गुस्सा जहाँ भी होता है, वहाँ प्रायः नुकसान ही होता है। गुस्सा करने वाला व्यक्ति कठिनाई में भी आ सकता है। आदमी की यह कमजोरी है कि वह न चाहते हुए भी गुस्से में आ जाता है। प्रेक्षाध्यान से गुस्से को शांत करने का प्रयास किया जा सकता है। जब गुस्सा आए, तब न बोले, न हाथ उठाए और उस स्थान को छोड़ दें, थोड़ी देर मौन रखें।

आक्रोश की स्थिति में भी मन को शांत रखने का प्रयास होने चाहिए। हमारे जीवन में गुस्सा एक शत्रु है। इसका सदा परित्याग करना चाहिए। चाहे परिवार हो या व्यापार, गुस्सा कहीं भी काम का नहीं है। व्यक्ति को अपनी वाणी में मिठास बनाए रखनी चाहिए।

धर्म के क्षेत्र में भी गुस्सा न करने से चित्त-समाधि बनी रह सकती है। हमारी प्रकृति शांत रहनी चाहिए। साधु तो सदैव प्रसन्नता के प्रतीक होते हैं। यदि थोड़ा गुस्सा मन में आ भी जाए, तो वाणी में वह प्रकट न हो। खमत-खामणा कर लें। योग और ध्यान से गुस्सा शांत हो सकता है। प्रसन्न मन और विनय से किसी से भी कार्य लिया जा सकता है। सेवा देने वाला भी शांत रहे। धृति और धैर्य को बनाए रखे।

यदि मुखिया थोड़ा शांत रहे तो उसका नेतृत्व और भी प्रभावशाली बन सकता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का उदाहरण देते हुए पूज्यवर ने बताया कि वे कितने शांत स्वभाव के थे। हमारी शांति और क्षमा की साधना विकसित हो — यही काम्य है।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन से पूर्व साध्वीवर्या श्री साध्वी सम्बुद्धयशाजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि यदि व्यक्ति में धैर्य और धृति-बल हो, तो वह जीवन में कुछ भी प्राप्त कर सकता है। धैर्य से कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। धैर्य हो तो मन स्थिर रहेगा और कार्य में निरंतरता आएगी। असफलता में ही सफलता छिपी होती है। हमें असफलता को चुनौती मानकर आगे बढ़ते जाना चाहिए। कार्यों में उतावलापन नहीं रखना चाहिए। यदि कुछ प्राप्त करना है, कोई उपलब्धि पानी है, तो उसके लिए धृति-बल आवश्यक है।

पूज्यवर की अभिवंदना में मुनि मदनकुमारजी, साध्वी संवेगप्रभाजी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ किशोर मंडल और ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुतियाँ हुईं। ज्ञानार्थी नियांश मेहता ने अपनी प्रस्तुति दी। मुमुक्षु विशाल परीख ने आचार्यश्री के सम्मुख अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति दी तो आचार्यश्री ने चतुर्मास के दौरान तीन सितम्बर को आयोज्य दीक्षा समारोह में मुमुक्षु विशाल को मुनि दीक्षा प्रदान करने की घोषणा करवाई।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

लोभ को पराजित करने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

शाहीबाग, अहमदाबाद।
28 जून, 2025

शाहीबाग प्रवास का द्वितीय दिन। वीतराग कल्प आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जिनवाणी की अमृतवर्षा करते हुए फरमाया कि हमारे यहां आगम वांग्मय का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। हमारी परंपरा जैन श्वेतांबर तेरापंथ में बत्तीस आगमों की मान्यता है—11 अंग, 12 उपांग, 4 मूल, 4 छेद और 1 आवश्यक। इन बत्तीस आगमों को हम प्रमाण के रूप में स्वीकार करते हैं। इनमें भी 11 अंग स्वतः प्रमाण हैं और बाकी आगम परतः प्रमाण हैं।

हर धर्म के अपने-अपने ग्रंथ होते हैं। हमारे यहां इन बत्तीस आगमों में एक है 'उत्तराध्ययन', जिसमें 36 अध्ययन हैं। इनमें तात्त्विक ज्ञान की बातें हैं और आध्यात्मिक साधना का पथदर्शन भी इस आगम से प्राप्त हो सकता है। कुछ प्रसंग, कथानक और घटनाक्रम भी हैं, जो वैराग्यवर्धक बन सकते हैं, और भी कई बातें हैं। दसवां अध्ययन छोटा सा है, जिसमें बार-बार 'समयं गोयम ! मा पमाइए' आया है।

आठवें अध्ययन में कहा गया है कि जैसे-जैसे लाभ बढ़ता है, वैसे-वैसे लोभ बढ़ता है। यह जो भीतर की कामना होती है कि 'और मिल जाए, और मिल जाए' — यही लोभ की वृत्ति है। यह व्यक्ति के भीतर रहती है और दसवें गुणस्थान तक विद्यमान रहती है। चार कषायों में सबसे अंत में समाप्त होने वाला लोभ होता है। इस एक लोभ की वृत्ति के कारण व्यक्ति अनेक अपराधों में प्रवृत्त हो सकता है — वह झूठ बोल जाता है, हिंसा में चला जाता है। लोभ एक महापर्वत है, इसे हमें पतला करने का प्रयास करना चाहिए। इसका उपाय बताया गया है कि 'लोभ को संतोष से जीतें।'

हमें अपनी इच्छाओं को सीमित करने का प्रयास करना चाहिए। जो मिल गया है, उसमें संतोष रखें। लोभ को कमजोर करने के लिए अलोभ का अनुचिंतन करें। दुःख का एक बड़ा कारण भी यही लोभ है। लोभ और कामानुवृत्तियों के कारण देवों और मनुष्यों को दुःख हो सकता है।

दो बातें हैं — इच्छा और आवश्यकता। आवश्यकताएं सीमित हों, इच्छाएं भी अधिक न हों। इच्छा और आवश्यकता में संतुलन स्थापित हो जाए तो जीवन सरल बन जाता है। आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है, लेकिन इच्छाएं तो आकाश के समान अनंत होती हैं। पूज्यवर ने एक प्रसंग से समझाया गया कि दिशा बदली तो दशा बदल सकती है, भावना बदली तो व्यक्ति आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ सकता है। गृहस्थजन ध्यान रखें कि इच्छाएं अनपेक्षित रूप से न बढ़ें। इच्छाओं का समीकरण बना रहे। इच्छा परिमाण और भोगोपभोग परिमाण — ये दो बातें जीवन में आ जाएं तो जीवनधारा ही बदल जाती है।

व्यक्ति के जीवन में प्रामाणिकता हो। जितना हो सके झूठ-कपट से बचने का प्रयास करें। धर्म स्थान के साथ-साथ कर्म स्थान में भी धर्म प्रवेश करे। नैतिक मूल्यों का विकास हो। पैसा जीवन की आवश्यकता है, पर वह हमारे साथ नहीं जाएगा। कहा गया है — 'पूत कपूत तो क्यूं धन संचे, पूत सपूत तो क्यूं धन संचे।' हम पीछे वालों के लिए धन की चिंता करते हैं, पर क्या हम उनके धर्म की भी चिंता करते हैं? हमें यह भी सोचना चाहिए कि हमारे पीछे हमारे परिवार में धर्म के संस्कार भी रहें। हमें इस लोभ कषाय को पराजित करने का प्रयास करना चाहिए — यह हमारे लिए हितकारी होगा। (शेष पेज 18 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 जुलाई - 13 जुलाई, 2025

संक्षिप्त खबर

जैन विद्या परीक्षा प्रमाण पत्र वितरण समारोह

विक्रॉली, मुंबई। 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में जैन विद्या के ज्ञानार्थियों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर जैन विद्या की महाराष्ट्र प्रभारी विमला डागलिया, महाराष्ट्र एवं गुजरात की सह-संयोजिका प्रेमलता सिसोदिया तथा महाराष्ट्र आगम प्रभारी सपना डागलिया की गरिमामयी उपस्थिति रही। स्वागत भाषण प्रकाश पोखरना ने दिया, जबकि कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन जैन विद्या केंद्र की व्यवस्थापिका स्नेहलता पोखरना ने किया। कार्यक्रम में कुल 40 व्यक्तियों की उपस्थिति रही। महिला मंडल मंत्री प्राची सूर्या ने समस्त आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

हैदराबाद। विश्व रक्तदाता दिवस के अवसर पर, तेरापंथ युवक परिषद हैदराबाद ने अविनाश कॉलेज ऑफ कॉमर्स के संयुक्त प्रयास से कॉलेज की सिकंदराबाद शाखा में रक्तदान शिविर का सफल आयोजन किया, जिसमें कुल 34 यूनिट रक्त एकत्र किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अखिल भारतीय जैन माइनॉरिटी फेडरेशन (तेलंगाना शाखा) के अध्यक्ष एवं तेलंगाना राज्य अल्पसंख्यक आयोग के समिति सदस्य हिमांशु बाफना एवं कॉलेज की प्राचार्या डॉ. लहरी सागी ने शिविर का विधिवत उद्घाटन किया। प्राचार्या ने स्वयं रक्तदान कर एक प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किया और कॉलेज के छात्रों एवं कर्मचारियों को रक्तदान के लिए प्रेरित किया। रक्तदान शिविर का प्रबंधन जननी ऑर्गनाइजेशन द्वारा किया गया, जिसकी अध्यक्ष एल. लक्ष्मी रेड्डी भी शिविर में उपस्थित थीं और उन्होंने आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तेयुप हैदराबाद के अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि मेगा रक्तदान शिविरों का उद्देश्य युवाओं में रक्तदान के प्रति जागरूकता बढ़ाना और इसे एक नियमित आदत के रूप में विकसित करना है। तेयुप मंत्री अनिल दूगड़ ने इस आयोजन को सफल बनाने के लिए स्कूल प्रबंधन, ब्लड बैंक टीम, सभी रक्तदाताओं और अतिथियों का आभार व्यक्त किया। मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव (MBDD) के संयोजक मनोज जैन ने आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शपथ ग्रहण समारोह

अमराईवाड़ी ओढव। तेरापंथ युवक परिषद अमराईवाड़ी ओढव के सत्र 2025-26 के पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह टीपीएफ के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि रजनीश कुमारजी के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि से सिंघवी भवन में आयोजित किया गया। शपथ ग्रहण समारोह की विधिवत शुरुआत मुनिश्री के नमस्कार मंत्रोच्चार से हुयी। संस्कारक दिनेश टुकलिया और पंकज डांगी ने जैन संस्कार विधि से शपथ विधि सम्पादित करवाई। तेयुप साथियों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन सज्जनलाल सिंघवी ने किया। निवर्तमान अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने नव निर्वाचित अध्यक्ष अशोक पगारिया को पद एवं दायित्व की शपथ दिलाई। तत्पश्चात तेयुप अध्यक्ष अशोक पगारिया ने अपनी टीम की घोषणा कर उन्हें शपथ दिलाई। नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने पधारे हुए सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए अपने विचार रखे। कार्यक्रम में अमराईवाड़ी के शाखा प्रभारी कुलदीप नवलखा ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं पूरी कार्यकारिणी टीम को उनके नए कार्यकाल की बधाई दी। मंत्री हेमंत पगारिया ने तेयुप अमराईवाडी के कार्यों की संक्षिप्त जानकारी दी। साध्वी काव्यलता जी द्वारा प्राप्त पत्र का वाचन सभा मंत्री निर्मल जैन ने किया। सभा अध्यक्ष नवरत्न चिप्पड़, मेवाड़ मंडल अध्यक्ष रमेश पगारिया, सज्जन सिंघवी, महिला मंडल अध्यक्ष लक्ष्मी सिसोदिया, मंत्री वंदना पगारिया, चंदनमल ओस्तवाल, दिनेश चंडालिया ने नव निर्वाचित अध्यक्ष को नए कार्यकाल की शुभकामनाएं प्रेषित की। संचालन मंत्री हेमंत पगारिया ने किया।

अध्यात्म का प्रवेश द्वार है योग

बीकानेर।

'शासनश्री' त्रय साध्वी मंजूप्रभा जी, साध्वी शशिरेखा जी और साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ समाज द्वारा योग दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी रोहितप्रभा जी, साध्वी आलोकप्रभा जी और साध्वी सम्यक्त्वप्रभा जी द्वारा आत्म-साक्षात्कार प्रेक्षाध्यान एवं मधुर संगान से मंगलाचरण के साथ हुआ।

'शासनश्री' साध्वी कुंथुश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा—योग अध्यात्म का प्रवेश द्वार है। पतंजलि ने कहा है, 'स्थिरसुखमासनम्'—जिसमें सुखपूर्वक स्थिरता से बैठा जा सके, वही आसन है। चित्त की निर्मलता और कार्यसिद्धि के लिए स्थिरता आवश्यक है। योगासन केवल शरीर की शुद्धि के लिए नहीं, बल्कि आत्मसंयम हेतु भी उपयोगी है। योग जीवन का विज्ञान और अन्वेषण है। उन्होंने श्वास-प्रेक्षा की विधि और उसकी महत्ता को भी रेखांकित किया, जिससे व्यक्ति अनंत शांति और शक्ति की अनुभूति कर सकता है।

'शासनश्री' साध्वी शशिरेखा जी ने परिषद को प्रेरित करते हुए कहा—योग वह मार्ग है, जिससे शरीर और आत्मा की शुद्धि होती है और व्यक्ति अंतर्मुख होता है।

योग दिवस केवल एक दिन का उत्सव नहीं, अपितु यह दैनिक अभ्यास का विषय है। यदि प्रतिदिन योग किया जाए, तभी इस दिवस की सार्थकता सिद्ध हो सकती है। ध्यान में प्रवेश हेतु शरीर का स्वस्थ होना आवश्यक है, जिसे योगासन और प्राणायाम के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

साध्वी मृदुला कुमारी जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा—जैन शासन और तेरापंथ धर्मसंघ में योग की परंपरा विशिष्ट रही है।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षाध्यान की पद्धति के माध्यम से योग का पुनरुद्धार किया। महिला मंडल की मंत्री रेणु बोथरा ने कहा—योग के माध्यम से न केवल शारीरिक स्वास्थ्य बल्कि मानसिक संतुलन भी प्राप्त किया जा सकता है।

चातुर्मासिक प्रवेश पर अवसर को सार्थक बनाने की प्रेरणा

नाथद्वारा।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी रचनाश्री जी का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश नाथद्वारा में हुआ। कांतिलाल धाकड़ के निवास स्थान से एक विशाल रैली के रूप में प्रस्थान कर साध्वीश्री का तेरापंथ भवन में प्रवेश हुआ, जहाँ भव्य स्वागत समारोह का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में विकास परिषद के सदस्य पदम पटावरी और पूर्व न्यायाधीश तथा संबोधि उपवन के अध्यक्ष बसंतीलाल बाबेल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अपने संबोधन में उन्होंने तेरापंथ संघ की महिमा का वर्णन करते हुए नाथद्वारा की ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख किया और वर्तमान चातुर्मास की मंगलकामनाएँ व्यक्त कीं। साथ ही, पूरे वर्ष को 'भिक्षुमय' बनाने हेतु प्रेरणा भी दी।

साध्वी रचनाश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि चातुर्मास काल में साधु-साध्वियाँ एक ही क्षेत्र में निवास करते हैं और यह वर्ष विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आचार्य श्री भिक्षु के 300वें जन्मदिवस का वर्ष है, जिसे 'भिक्षु चेतना वर्ष' के रूप में मनाया जाएगा। इस अवसर को सार्थक बनाने के लिए साध्वीश्री ने तीन प्रमुख योजनाएँ प्रस्तुत कीं: - 1. सवा करोड़ 'ॐ भिक्षु' जाप, 2. 10 प्रत्याख्यानों का तप, 3. भिक्षु विचार दर्शन विषय पर ज्ञान प्रतियोगिता।

साध्वी गीतार्थप्रभा जी, साध्वी प्रज्ञाप्रभा जी और साध्वी नमनप्रभा जी ने गीतों के माध्यम से धर्म-आराधना की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में कांकरोली सभा के अध्यक्ष लाभचंद बोहरा, मंत्री धर्मेंद्र मेहता, महासभा सदस्य कांतिलाल धाकड़, अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष सुभाष सामोता, सकल जैन समाज अध्यक्ष ईश्वरचंद्र सामोता, महिला मंडल अध्यक्ष मंजू पोरवाल और फतेहचंद बोहरा ने साध्वीश्री के प्रति अपने भावों की अभिव्यक्ति की।

महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति दी गई। सभा के उपाध्यक्ष शिवलाल डागलिया ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में कांकरोली, कोशीवाडा, कुंठवा, राजनगर और उदयपुर से बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन महासभा सदस्य रमेश सोनी ने किया। युवती मंडल ने भिक्षु अष्टकम के साथ मंगलाचरण की प्रस्तुति दी।

संतों का सान्निध्य मिलना अहोभाग्य की बात

चंडीगढ़।

पंजाब के राज्यपाल व चंडीगढ़ के प्रशासक गुलाबचंद कटारिया सहज रूप से अणुव्रत भवन, स्थित तुलसी सभागार में पहुंचे, जहाँ उन्होंने मुनि विनयकुमार जी 'आलोक' के दर्शन व आशीर्वाद प्राप्त किए।

उन्होंने कहा, 'मुनिश्री का तप-त्याग इतना प्रभावशाली है कि मेरे कदम सहज ही राजभवन से अणुव्रत भवन की ओर बढ़ चले। संतों का सान्निध्य मिलना अहोभाग्य की बात होती है। राज्यपाल ने मुनिश्री से आचार्य भिक्षु की 300वीं जन्म जयंती (8 जुलाई) पर उपस्थित रहने का संकल्प व्यक्त करते हुए कहा, 'आचार्य भिक्षु का जीवन-दर्शन केवल जैन परंपरा तक सीमित नहीं, बल्कि सार्वभौमिक जीवन मूल्यों का प्रतीक है। उन्होंने सत्य, विनय, संयम, साधना, सेवा और संगठन के आधार पर धार्मिक और सामाजिक जीवन को अनुशासित करने की प्रेरणा दी। उनका चिंतन आज भी प्रकाशस्तंभ के समान है।' मुनि विनयकुमार जी 'आलोक' ने वर्तमान सामाजिक हालातों पर चिंता जताते हुए कहा, 'संस्कारों की कमी के कारण संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। बच्चे अपने दादा-दादी, चाचा-चाची तक से दूरी बनाने लगे हैं। माता-पिता का दायित्व है कि वे बच्चों को रोज़ संस्कारों की शिक्षा दें और उन्हें व्यवहारिक जीवन में मर्यादा का महत्व समझाएं। संस्कारहीनता ही परिवारों में विघटन का प्रमुख कारण बन रही है।'

सप्तम आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर व आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल्स का शुभारंभ

विजयनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में, तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर द्वारा सप्तम आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल्स का भव्य शुभारंभ कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्रोच्चार से की गई। संस्कारक राकेश दुधोड़िया, विकास बांठिया, धीरज भादानी, संपत चावत, लाभेश कांसवा ने विविध मंत्रोच्चार द्वारा कार्यक्रम को निष्पादित करवाया।

अभातेयुप अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में परिषद अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि तेयुप विजयनगर द्वारा स्थापित यह सातवां डायग्नोस्टिक सेंटर एवं आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल समाज के लिए कल्याणकारी सिद्ध होगा। राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने अपने वक्तव्य में तेयुप विजयनगर के प्रति शुभकामनाएँ सम्प्रेषित करते हुए कहा कि रियायती दरों पर किए गए परीक्षण जरूरतमंदों की सहायता करते हैं।

मुख्य अतिथि अभातेयुप के अभूतपूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया ने कहा कि परिषद द्वारा सात-सात एटीडीसी का संचालन विजयनगर की विशिष्टता को दर्शाता है। उन्होंने यह भी कहा कि अब बड़े लक्ष्य लेकर कार्य करना चाहिए। अभातेयुप उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने उपस्थित तेयुप साथियों से आह्वान किया कि विजयनगर में एक अस्पताल के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। उद्घाटनकर्ता शायर मालू ने तेयुप विजयनगर को मानव सेवा हेतु प्रेरक एवं स्थायी गतिविधियों के लिए बधाई प्रेषित करते हुए अपने वक्तव्य से सभी को उत्साहित किया।

संस्था शिरोमणि श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के पूर्व अध्यक्ष एवं उद्घाटनकर्ता हीरालाल मालू ने सभी का उत्साहवर्धन किया। अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा ने तेयुप विजयनगर के प्रत्येक सदस्य के श्रम और लगन की सराहना की।

एटीडीसी के राष्ट्रीय सहप्रभारी आलोक छाजेड़, आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल के राष्ट्रीय प्रभारी विकास बोथरा एवं राष्ट्रीय सहप्रभारी अमित दक, शाखा प्रभारी रोहित कोठारी, सभा अध्यक्ष मंगल कोचर एवं महिला मंडल अध्यक्षा मंजू गादिया ने परिषद को शुभकामनाएं प्रेषित कीं। तेयुप विजयनगर के निवर्तमान अध्यक्ष एवं एटीडीसी प्रभारी राकेश पोखरणा, तेयुप विजयनगर के पूर्व अध्यक्ष एवं बेंगलुरु की अन्य परिषदों से पधारे पदाधिकारियों ने भी बधाई प्रेषित की। पधारे हुए सभी दानदाताओं, अतिथियों, आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल की संचालिका तारा देवी, लोकेश, मंजू युग देरासरिया एवं एटीडीसी स्टाफ का परिषद परिवार द्वारा सम्मान किया गया। प्लैटिनम, गोल्डन, सिल्वर एवं सहप्रायोजक परिवारजन, तेयुप विजयनगर प्रबंध मंडल, पूर्व अध्यक्ष, कार्यकारिणी सदस्य, परिषद परिवार तथा श्रावक समाज की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का समापन संस्कारक राकेश दुधोड़िया द्वारा मंगल पाठ से किया गया। अंत में मंत्री संजय भटेवरा ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

दीक्षार्थी अभिनंदन कार्यक्रम

झकनावदा/पेटलावद।

साध्वी पंकजश्री जी के सान्निध्य में दीक्षार्थी मोहक बेताला का मंगल भावना का कार्यक्रम बहुत ही झकनावदा तेरापंथ सभा भवन में किया गया।

साध्वीश्री ने जनमेदिनी को भगवती जैन दीक्षा पर प्रकाश डालते हुए कहा तेरापंथ धर्म संघ में एक आचार्य के नेतृत्व में अनुशासन, मर्यादा से शिष्य अपनी साधना को पुष्ट बनाता है। जैन दीक्षा परिषहों को सहने का कंटीला मार्ग है। सहिष्णुता, तितिक्षा से साधक अपनी आत्मा को पावन बनाता है। जो शिष्य सेवा, समर्पण, आज्ञा, व्यवस्था का अनुसरण करता है वह संयमी जीवन को हिमालय सी ऊंचाई देता है। मुमुक्षु मोहक 3 सितंबर 2025 को अहमदाबाद कोबा में आचार्य श्री महाश्रमण जी के करकमलों से दीक्षा ग्रहण करेंगे। उनके भावी जीवन की मंगलकामना करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा — सदैव अप्रमत्त रहकर संघ व संघपति का गौरव बढ़ाते रहें, संयम की राहों में सदैव फूल सजाते रहें।

साध्वी शारदाप्रभा जी ने संयोजन के माध्यम से कहा वीतराग बनने के लिए दीक्षा का पथ अनिवार्य है। कोई वीर पुरुष ही दीक्षा ग्रहण करता है। मुमुक्षु मोहक बेताला भगवान महावीर की वाणी का अनुसरण करने जा रहे हैं। इस अवसर पर भुवनेश्वर से पधारे विवेक बेताला, माता विज्ञा बेताला और बहन झंकार बेताला व मुमुक्षु मोहक का झकनावदा के श्रावकों ने स्वागत किया।

आशीष भांगू एवं प्रेक्षा कोठारी, झकनावदा तेरापंथ सभा मंत्री अजय बोहरा, तेरापंथ सभा अध्यक्ष विजय बोहरा ने अपने विचार रखे। महिला मंडल ने गीतिका प्रस्तुत की और महिला मंडल मंत्री मोना कालिया ने वैरागी मोहक बेताला का अभिनंदन करते हुए अपने विचार रखे।

मुमुक्षु मोहक की माता विज्ञा बेताला ने वैरागी मोहक के जीवन के बारे में बताते हुए उन्हें संयम मार्ग पर बढने का आशीर्वाद प्रदान किया। मुमुक्षु मोहक ने अपने दादी महाराज साध्वी पंकजश्री जी के सान्निध्य में अपने विचार रखते हुए कहा यह जीवन क्षणभंगुर है, कब मौत का पैगाम आ जाए, इसे अतिशीघ्र सार्थक कर लेना चाहिए।

आत्मसंयम की उत्कृष्ट साधना है दीक्षा

छतरपुर, नई दिल्ली।

साध्वी कुन्दनरेखा जी के सान्निध्य में तथा तेरापंथ सभा दिल्ली एवं दिल्ली प्रवासी पारिवारिक जनों द्वारा मुमुक्षु मोहक का मंगलभावना कार्यक्रम आयोजित किया गया।

साध्वी कुन्दनरेखा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि दीक्षा आत्मसंयम की उत्कृष्ट साधना है, जो जीवन का रूपांतरण कर भवसागर से पार लगाती है। तेरापंथ धर्मसंघ की दीक्षा विशेष होती है – एक गुरु, अनुशासन और करुणा से परिपूर्ण वातावरण साधना को उत्कृष्ट बनाते हैं। मुमुक्षु मोहक आत्मसाधना में उत्तरोत्तर प्रगति करे, यही मंगलभावना है। साध्वी सौभाग्ययशा जी ने तेरापंथ धर्मसंघ की एकता, अनुशासन और मर्यादा की प्रशंसा करते हुए मोहक को शीघ्र आत्मकल्याण की शुभकामनाएं दीं। साध्वी कल्याणयशा जी ने दीक्षा को आत्मशुद्धि और शाश्वत सुख की प्राप्ति का मार्ग बताया।

महासभा अध्यक्ष मनसुख सेठिया ने इसे पारिवारिक गौरव बताया कि उनका पोता संयम पथ की ओर अग्रसर है। उपाध्यक्ष संजय खटेड ने कहा कि पाँच महाव्रतों की श्रृंखला मोहक को अप्रमत्त बनाएगी। सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने 'तेरह करोड़' का संदर्भ देते हुए दीक्षा को तेरह नियमों की अनुपालना बताया, जो जागरण का प्रतीक है।

इस अवसर पर पारिवारिक व भुवनेश्वर प्रवासी बहनों ने गीत प्रस्तुत किए। चंदा डूंगरवाल, शशि सेठिया, मधु श्रीमाल, प्रकाश बेताला, झलक बेताला, सम्पतराज बेताला, वर्धमान बेताला आदि ने गीत, कविता एवं वक्तव्यों के माध्यम से अपनी मंगलभावनाएं प्रकट कीं।

मुमुक्षु मोहक ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि संसार मोहबंधन में उलझा है, जबकि उन्हें आचार्य श्री महाश्रमणजी जैसे तेजस्वी गुरु का मार्गदर्शन मिला है। उन्होंने कहा कि संयम जीवन कठिन होते हुए भी मुख्यमुनि महावीर कुमार जी स्वामी के कारण सुगम बन गया। अंत में उन्होंने अपनी साधना के लिए चित्त की निर्मलता, पवित्रता और एकाग्रता की मंगलकामना की।

चातुर्मासिक प्रवेश से तप, त्याग व अध्यात्म के खुलेंगे द्वार

भीनासर।

आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी जिनबाला जी का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश आध्यात्मिक रैली के साथ भीनासर स्थित तेरापंथ भवन में संपन्न हुआ। प्रवेश के अवसर पर साध्वी जिनबाला जी ने कहा कि यह स्वागत त्याग, श्रद्धा, समर्पण और भैक्षव शासन का सम्मान है। हम गुरु की डोर से बंधे हुए हैं, इसलिए यह स्वागत हो रहा है। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति गुरु की आज्ञा का पालन करता है, वह सदैव सफलता की ओर अग्रसर होता है।

सभा को संबोधित करते हुए आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के मुख्य न्यासी महावीर रांका ने कहा कि रांका परिवार की दो-दो साध्वियाँ इस वर्ष भीनासर में चातुर्मासिक अध्यात्मिक लाभ प्रदान करेंगी। उन्होंने आशा जताई कि साध्वीवृंद के सान्निध्य में श्रावक-श्राविकाओं को व्यसन, गलत आदतों और अनैतिक कार्यों से दूर रहने की प्रेरणा मिलेगी।

आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष गणेशमल बोथरा ने अपने उद्बोधन में कहा कि भीनासरवासियों का यह सौभाग्य है कि उन्हें साध्वीश्री के सान्निध्य में धर्म और अध्यात्म का लाभ मिलेगा। जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गनाइजेशन की महिला चेयरपर्सन ममता रांका ने कहा कि बड़ी पुण्याई होती है, जब चारित्र आत्माओं के दर्शन व उनकी अमृतवाणी सुनने का अवसर मिलता है। सभा अध्यक्ष विशाल सेठिया ने जानकारी दी कि एकता, विशाखा पुगलिया, जैनम, मान्या, तेरापंथ महिला मंडल भीनासर की अध्यक्ष शशि गोलछा, गंगाशहर सभा मंत्री जतन संचेती, अशोक बोथरा, शारदा बैद आदि ने वंदना, गीत और भाषणों के माध्यम से साध्वीवृंद का अभिनंदन किया। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा भी सुंदर प्रस्तुतियाँ दी गईं। संचालन मंत्री चैनप्रकाश गोलछा ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 जुलाई - 13 जुलाई, 2025

गणाधिपति आचार्य श्री तुलसी के महाप्रयाण दिवस पर विविध आयोजन

पर्वत पाटिया

गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी का 29वां महाप्रयाण दिवस तेरापंथी सभा पर्वत पाटिया में प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी का मां वंदना के गर्भ में देव विमान के स्वप्न के साथ अवतरण हुआ। उन्होंने सम्पूर्ण जीवन पौरुष के साथ और मानव विकास के लिए जिया। वे मानव मन के प्रदूषण को हटाते रहे। हर भक्त के हृदय में बसे उस महामानव को कभी भुलाया नहीं जा सकता। वे समाधायक पुरुष थे। मानवता के नाम सैकड़ों अवदान देने वाले आचार्य तुलसी का व्यक्तित्व सौभाग्य से इस धरा पर अवतरित हुआ। उनकी निर्णायक क्षमता बेजोड़ थी। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने गुरुदेव श्री तुलसी के जीवन से जुड़े अनेक घटना-प्रसंगों का उल्लेख किया।

धर्मचंद श्यामसुखा ने मंगलाचरण के रूप में गीतिका प्रस्तुत की। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के कार्यकारिणी सदस्य एवं सभा मंत्री प्रदीप गंग, सिटीलाईट सभा अध्यक्ष हजारीमल भोगर, महिला मंडल अध्यक्षा रंजना कोठारी, तेयुप अध्यक्ष अमित बुच्चा, अर्जुन मेड़तवाल, अलका सांखला ने गुरुदेव श्री तुलसी के महनीय कार्यों का गुणगान करते हुए सादर श्रद्धांजलि अर्पित की। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने सामूहिक गीतिका का संगान किया। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने काव्यान्जलि प्रस्तुत की। साध्वी डॉ. राजुलप्रभा जी ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी पूरे विश्व में कल्पवृक्ष तुल्य थे। साध्वीवृंद ने सामूहिक आस्था स्वर प्रस्तुत किए। सभा संगठन मंत्री पवन बुच्चा ने आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी। साध्वी डॉ. चैतन्यप्रभा जी ने कुशलता पूर्वक कार्यक्रम का संचालन किया।

बेंगलुरु

गणाधिपति आचार्य श्री तुलसी के 29वें महाप्रयाण दिवस के अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद्, बेंगलुरु की प्रतिष्ठित भजन मंडली प्रज्ञा संगीत सुधा द्वारा संकलित भक्ति गीत संग्रह 'प्रज्ञा संगीत सुधा' का विमोचन शांतिनगर, बेंगलुरु में डॉ. मुनि श्री पुलकित कुमार जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। डॉ. मुनि श्री पुलकित कुमार जी ने अपने मंगल प्रवचन में कहा कि 'इस संग्रह में गुरुभक्ति, जैन दर्शन और जीवन मूल्यों से जुड़े गीत आत्मिक ऊर्जा का संचार करेंगे।' समारोह में मंडली द्वारा गुरुदेव श्री तुलसी को गीतिका के माध्यम से संगीतमय श्रद्धांजलि दी गई। तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलुरु के अध्यक्ष विमल धारीवाल ने इसे अपने कार्यकाल का सौभाग्य बताया और मुनि श्री के सान्निध्य के लिए कृतज्ञता प्रकट की।

विमोचन कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली, मंत्री विनोद छाजेड़, वरिष्ठ उपासक डालमचंद नौलखा, अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोकरणा, प्रज्ञा संगीत सुधा के सदस्य, परिषद् सदस्यगण, महिला मंडल अध्यक्षा ऋजु डूंगरवाल, अणुव्रत समिति के नव-निर्वाचित अध्यक्ष सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे। मंच संचालन करते हुए संयोजक रोहित कोठारी ने पूर्व संयोजकों एवं वर्तमान सदस्यों के योगदान का उल्लेख कर आभार व्यक्त किया। अध्यक्ष धारीवाल ने सभी प्रायोजकों व श्रद्धालुजनों के सहयोग हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया।

साउथ कोलकाता

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार नारी उन्नायक आचार्य श्री तुलसी का 29वां महाप्रयाण दिवस विसर्जन दिवस के रूप में भव्य रूप से मनाया गया। यह बृहद कोलकाता स्तरीय आयोजन तेरापंथ महिला मंडल साउथ कोलकाता द्वारा तेरापंथ भवन में संपन्न हुआ। इस आयोजन में पूर्वांचल, कोलकाता, दक्षिण हावड़ा, उत्तर हावड़ा, मध्य कोलकाता, टॉलीगंज और बेहाला महिला मंडलों ने सहभागिता निभाई।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा— 'आचार्य तुलसी तेरापंथ धर्मसंघ के नवम अधिशास्ता थे। वे मानवता और शांति के मसीहा, युगदृष्टा, युगस्रष्टा, युगपुरुष और युगचिंतक थे। वे आत्मार्थी, पापभीरु, अवसरज्ञ, उपायज्ञ, अनाग्रह और सहिष्णुता के साधक थे। कठिनतम परिस्थितियों में भी वे संतुलन बनाए रखते थे।' उन्होंने कहा कि आचार्य तुलसी प्रवचनकार, साहित्यकार, संगीतज्ञ, संत और प्रशासक—सभी रूपों में अद्वितीय थे। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान, आगम संपादन, महिला जागरण और शिक्षा के क्षेत्रों में युगांतकारी योगदान दिया। मुनिश्री ने कहा, 'आज का युग पदलोभ का युग है, पर आचार्य श्री ने अपने पद का विसर्जन कर अपने ही उत्तराधिकारी को आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित किया। यह विसर्जन एक आदर्श बन गया। विसर्जन चेतना से ही नवसृजन संभव है।' कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा तुलसी अष्टकम् के संगान से हुआ। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर भक्ति गीत प्रस्तुत किया। स्वागत वक्तव्य साउथ कोलकाता सभा अध्यक्ष बिनोद कुमार चोरड़िया एवं महिला मंडल साउथ कोलकाता की अध्यक्षा पद्मा कोचर ने दिया। इस अवसर पर विकास परिषद के सदस्य बनेचंद मालू, महासभा के कोषाध्यक्ष मदन मरोठी, महिला मंडल की संगठन मंत्री रमण पटावरी और उपासक प्राध्यापक निर्मल नौलखा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। नाटिका मंचन में साउथ कोलकाता, पूर्वांचल, उत्तर हावड़ा, मध्य कोलकाता, टॉलीगंज और बेहाला महिला मंडलों ने आचार्य तुलसी के विविध अवदानों पर शिक्षाप्रद प्रस्तुतियां दीं। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने तथा आभार ज्ञापन महिला मंडल साउथ कोलकाता की मंत्री अनुपमा नाहटा ने किया।

बोरावड़

जैन कॉलोनी में 'शासनश्री' साध्वी मधुरेखा जी के सान्निध्य में युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी का 29वां महाप्रयाण दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई, तथा मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रस्तुत किया गया। गणाधिपति गुरुदेव तुलसी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए साध्वी श्री ने कहा कि विलक्षण व्यक्तित्व के धनी आचार्य श्री तुलसी प्रारंभ से ही अनुशासनप्रिय थे। ऐसा प्रतीत होता था कि अनुशासन उनके जीवन का पर्याय बन गया था। मात्र 22 वर्ष की आयु में आचार्य पद को स्वीकार कर उन्होंने लगभग 60 वर्षों तक धर्मसंघ को अपने कुशल नेतृत्व से लाभान्वित किया। उन्होंने ज्ञानशाला, प्रेक्षाध्यान, अणुव्रत और जीवन-विज्ञान जैसे विविध आयामों के माध्यम से संघ को हिमालय जैसी ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। गुरुदेव के 29वें महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य में 13 घंटे का अखंड जप किया गया। 10 प्रत्याख्यानों में 50 भाई-बहनों ने त्याग और तप का अभ्यास किया। विसर्जन दिवस पर त्याग का संकल्प भी लिया। साध्वी मधुयशा जी ने गुरुदेव के योगदान को रेखांकित करते हुए कहा कि साधु-साध्वी वर्ग के लिए शोध क्षेत्र में जो सुगमता आई है, वह आचार्य तुलसी की ही देन है। साध्वी सविताश्री ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की, जबकि साध्वी लोकोत्तरप्रभा जी ने कविता के माध्यम से आचार्य श्री तुलसी को श्रद्धांजलि अर्पित की। सभा अध्यक्ष नेमीचंद गेलड़ा, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अमित भंडारी, महिला मंडल अध्यक्षा हर्षा चोरड़िया सहित भारती कोटेचा, सरोज देवी गेलड़ा, गौरवी लोढ़ा, प्रकाश लोढ़ा एवं मनीष सुराना ने श्रद्धा के भाव अर्पित किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सुव्रतयशा जी ने कुशलता से किया।

हैदराबाद

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद द्वारा गणाधिपति गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी के महाप्रयाण दिवस (विसर्जन दिवस) पर 'विसर्जन से नवसृजन की ओर' विषयक कार्यशाला का आयोजन साध्वी डॉ. गवेषणाजी ठाणा-4 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, हिमायत नगर में किया गया।

कार्यक्रम से पूर्व दुलीचंद नाहटा के निवास स्थान से साध्वीश्री का पदार्पण एक विसर्जन रैली के रूप में तेरापंथ भवन, हिमायत नगर में हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने सहभागिता की। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। तत्पश्चात मंडल की बहनों द्वारा तुलसी अष्टकम् का भावपूर्ण संगान किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष कविता आच्छा ने समस्त श्रावक समाज का स्वागत व अभिनंदन करते हुए बताया कि विसर्जन दिवस केवल श्रद्धांजलि का अवसर नहीं, बल्कि आचार्य श्री तुलसी की विचारधारा को अपने भीतर उतारने का एक संकल्प है। साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने कहा— आचार्य श्री तुलसी की जीवन-गाथा भारतीय चेतना का एक अभिनव उन्मेष है, आश्चर्यों की वर्णमाला से आलोकित एक महालेख है। आपने समाज को अनेक नवीन विचार और आयाम प्रदान किए। धार्मिक जगत के इतिहास में आपने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया—जिसमें एक हैः अपने पद का विसर्जन। विसर्जन धन का, समय का, ज्ञान का, वस्तु का हो सकता है, किंतु सारी सक्षमताओं के होते हुए पद का विसर्जन करना अत्यंत विशिष्ट और विलक्षण कार्य है।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा— विश्व इतिहास में यह व्यक्तित्व दुर्लभ है, जैसा आचार्य श्री तुलसी का था। उनका व्यक्तित्व और कर्तृत्व इतना विशाल है कि उसे शब्दों में बांधना और गीतों में उकेरना कठिन है। साध्वी मेरुप्रभा जी ने 'सांसों में तुलसी का नाम' गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी दक्षप्रभा जी ने भी सुमधुर गीतिका की प्रस्तुति दी।

सिकंदराबाद सभा मंत्री हेमंत संचेती, युवक परिषद अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा एवं अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश एच. भंडारी ने कार्यक्रम के लिए महिला मंडल को शुभकामनाएं प्रेषित कीं। संगठन मंत्री हर्षलता दूधोडिया के निर्देशन में विसर्जन दिवस पर एक लघु नाटिका की प्रस्तुति दी गई। सभी सभा-संस्थाओं ने संयुक्त रूप से गुरुदेव तुलसी के प्रति श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए गीतिका का संगान किया। श्रावक समाज द्वारा विसर्जन पत्र भरकर संकल्प लिया गया। मंत्री सुशीला मोदी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। कार्यक्रम की संयोजिका हर्षलता दूधोडिया व रूबी दुगड़ थीं। अंत में आभार ज्ञापन प्रचार-प्रसार मंत्री मीनाक्षी सुराणा ने किया।

शिवकाशी (तमिलनाडु)

शिवकाशी तेरापंथ सभा एवं महिला मंडल के तत्वावधान में, डागा निवास पर मुनि हिमांशु कुमार जी के सान्निध्य में गणाधिपति पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी का 29वां महाप्रयाण दिवस श्रद्धा और भक्ति से मनाया गया। कार्यक्रम का शीर्षक था 'मानवता के मसीहा आचार्य श्री तुलसी', जिसमें श्रद्धालु उनके जीवन के कुछ अद्भुत प्रसंगों से परिचित हुए। आचार्य श्री तुलसी द्वारा दीक्षित मुनि श्री हिमांशु कुमार जी ने अपने अनुभवों और घटनाओं के माध्यम से 'तुलसी गाथा' का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया। मुनिवृंद के सान्निध्य में आयोजित इस कार्यक्रम में लगभग 60 से 65 श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही। इस अवसर पर प्रातः काल की वेला में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला 'मैत्री के रंग, प्रेक्षाध्यान के संग' में मुनि हिमांशु कुमार जी ने प्रेक्षाध्यान का सुंदर प्रयोग करवाया। मुनि हेमंत कुमार जी ने विषय पर अपने भावपूर्ण विचार प्रकट किए। कार्यक्रम का समापन मंगलपाठ के साथ हुआ।

गणाधिपति आचार्य श्री तुलसी के महाप्रयाण दिवस पर विविध आयोजन

कांटाबांजी

अभातेममं के निर्देशानुसार आचार्य तुलसी महाप्रयाण दिवस को विसर्जन दिवस कार्यशाला के रूप में स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र एवं तुलसी अष्टकम के संगान के साथ हुआ। महिला मंडल की अध्यक्षा आशा जैन ने आचार्य श्री तुलसी के जीवन पर विचार व्यक्त करते हुए उनके महान व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर प्रकाश डाला। महिला मंडल द्वारा गुरुदेव तुलसी के जीवन-दर्शन पर आधारित एक सुंदर प्रस्तुति दी गई, जिसे उपस्थित सभी बहनों ने सराहा। कार्यक्रम के अगले चरण में विसर्जन दिवस के अवसर पर नारीशक्ति से संबंधित संकल्प दिलवाए गए। इसके साथ ही 'प्रेक्षा प्रवाहः शक्ति एवं शांति की ओर' शीर्षक के अंतर्गत कार्यशाला 'मंत्र प्रेक्षा-अर्हम' का आयोजन भी विशेष रूप से किया गया। महिला मंडल की सदस्य पूजा जैन ने अर्हम मंत्र का जाप कराया और इसके अर्थ को सरल भाषा में समझाया। 'Zero से Hero' बनने की प्रेरणा पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि दृढ़ संकल्प, सकारात्मक सोच, सहयोग की भावना और सबसे महत्वपूर्ण — धैर्य, ये चार गुण हों तो व्यक्ति का भौतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास निश्चित है। उन्होंने विशेष रूप से युवाओं में धैर्य की कमी को वर्तमान समय की प्रमुख चुनौती बताया। संचालन रितु जैन ने किया और आभार ज्ञापन श्वेता जैन द्वारा किया गया। कार्यशाला में लगभग 18 बहनों की उपस्थिति रही।

अमराईवाडी ओढव

आचार्य श्री तुलसी के 29वें महाप्रयाण दिवस के अवसर पर जप-तप अनुष्ठान एवं सामायिक का आयोजन उपासिका संगीता सिंघवी के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, अमराईवाड़ी-ओढव द्वारा तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत उपासिका संगीता सिंघवी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। उन्होंने आचार्य श्री तुलसी के जीवन दर्शन एवं उनके महान कार्यों पर प्रकाश डालते हुए सभी उपस्थितों को उनके प्रेरणादायी व्यक्तित्व से परिचित कराया। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष अशोक पगारिया ने उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए वक्तव्य दिया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में संयोजक दिनेश टुकलिया और पंकज डांगी का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम में कुल 35 सदस्यों की सहभागिता रही। समापन अवसर पर अध्यक्ष अशोक पगारिया ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

झकनावदा

साध्वी पंकजश्री जी के सान्निध्य में गणाधिपति आचार्य श्री तुलसी का 29वां महाप्रयाण दिवस श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर जनसमूह को संबोधित करते हुए साध्वीश्री ने कहा—'गुरुदेव तुलसी का जीवन विराट और प्रेरणाप्रद था। वे दिन में स्वप्न देखते और दिन में ही उन्हें साकार कर देते थे। आपने मानवता को शांति से जीने का संदेश दिया और समाज के चारित्रिक स्तर को ऊंचा उठाने हेतु 'अणुव्रत आंदोलन' का सूत्रपात किया।' साध्वीश्री ने आगे कहा कि 'नया मोड़' जैसे अवदान ने अंधविश्वासों को तोड़ने में क्रांतिकारी भूमिका निभाई। उन्होंने बताया कि आचार्य तुलसी के अनुसार '21वीं सदी नारी की सदी होगी।' उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ को सात समंदर पार पहुंचाया और जैन एकता की दिशा में ऐतिहासिक पहल की।

साध्वी शारदाप्रभा जी ने भी श्रद्धांजलि स्वरूप अपने भाव प्रकट करते हुए कहा—'जैसे महासागर को गागर में नहीं भरा जा सकता, वैसे ही आचार्य तुलसी के विराट नेतृत्व, व्यक्तित्व और कर्तृत्व को कुछ समय में नहीं समेटा जा सकता।' उन्होंने कहा कि वे युग की नब्ज पहचानने वाले प्रथम राष्ट्रसंत थे, जिन्होंने नैतिकता और प्रामाणिकता का संदेश देते हुए सम्प्रदाय के सीमित घेरे को पार कर संपूर्ण मानवता के लिए जीवन जीया। आशीष भांगू ने भावपूर्ण गीतिका प्रस्तुत की। मुकेश कोठारी ने अपने विचारों से श्रोताओं को भावविभोर किया। महिला मंडल की ओर से प्रीति बोहरा ने सुंदर गीतिका की प्रस्तुति दी।

साउथ हावड़ा

तेरापंथ युवक परिषद, साउथ हावड़ा द्वारा गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के 29वें महाप्रयाण दिवस पर धम्म जागरण का आयोजन नेमचंद बाबूलाल अजीत दुगड़ के निवास स्थान पर किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण द्वारा किया गया। इसके पश्चात शनिवारीय सामायिक के अंतर्गत अर्हंत वंदना तथा तेरापंथ प्रबोध का संगान किया गया। श्रद्धा और समर्पण के साथ भजनों की प्रस्तुति युवाओं सहित पारिवारिक जनों द्वारा भेंट की गई। भजनों के माध्यम से गुरुदेव तुलसी के जीवन, दर्शन और अणुव्रत आंदोलन को प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में युवक परिषद के सदस्यों सहित पारिवारिक जनों की उपस्थिति रही। अमित बेगवानी ने एवं परिवार की ओर से बाबूलाल दुगड़ ने आभार व्यक्त किया।

माधनूर, तमिलनाडु

मुनि रश्मिकुमारजी के सान्निध्य में, अभातेममं के तत्वावधान में तथा तेरापंथ महिला मंडल गुडियात्तम के आयोजन में, आचार्य श्री तुलसी का 29वां महाप्रयाण दिवस (विसर्जन दिवस) माधनूर में श्रद्धापूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुई। मुनि रश्मिकुमारजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आचार्य श्री तुलसी के जीवन में संघर्षों की निरंतरता रही, किंतु वे कभी विचलित नहीं हुए, सदैव आगे बढ़ते रहे। वे सक्रियता, जागरूकता और प्रसन्नचित्त जीवन जीने की कला भलीभांति जानते थे। प्रेक्षाध्यान, अणुव्रत आदि उनके अनेक अवदान न केवल जैन समाज तक, बल्कि जन-जन तक पहुंचे। मुनि प्रियांशुकुमारजी ने कहा कि जैसे तुलसी का पौधा अनेक गुणों से भरपूर होता है, वैसे ही आचार्य श्री तुलसी भी अनंत गुणों के भंडार थे। वे एक कीर्तिमान पुरुष थे। कार्यक्रम में माधनूर, गुडियात्तम, वाणियंबाडी और के. वी. कुप्पम से अनेक श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाएं सहभागी बने।

गंगाशहर

गुरुदेव आचार्य तुलसी के 29वें महाप्रयाण दिवस पर आयोजित सप्त दिवसीय कार्यक्रमों की श्रृंखला में 'भावांजलि' कार्यक्रम का आयोजन आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के तत्वावधान में गुरुदेव के अंतिम प्रवास स्थल बोथरा भवन, गंगाशहर में, उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुनिश्री ने अपने उद्बोधन में गुरुदेव तुलसी के जीवन, अवदान और संस्मरणों के माध्यम से 'तुलसी युग' का चित्रण मानो चलचित्र की भांति प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि आचार्य तुलसी दिवा स्वप्न दृष्टा थे—उन्होंने जो-जो स्वप्न देखे, उन्हें केवल आकार ही नहीं दिया, बल्कि उनकी जड़ें भी गहराई तक जमा दीं। उन्होंने केवल साधु-साध्वियों का नहीं, अपितु श्रावक-श्राविकाओं सहित समग्र जैन और अजैन समाज का भी मार्गदर्शन करते हुए उन्हें आत्मिक विकास की दिशा में प्रेरित किया। जैसे-जैसे समय बीतता जा रहा है, वैसे-वैसे गुरुदेव की महिमा और उनके अवदानों का प्रभाव भी उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। यह सभी योगदान आज फलदायी, शुभदायी और वरदायी सिद्ध हो रहे हैं। आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा (गंगाशहर, बीकानेर, भीनासर), तेरापंथ न्यास, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, अणुव्रत समिति, कन्या मंडल, किशोर मंडल सहित अनेक संस्थाओं एवं श्रावक समाज के प्रतिनिधियों ने गुरुदेव तुलसी को वक्तव्य, काव्य-पाठ एवं गीतों के माध्यम से अपनी भावांजलि अर्पित की।

कोयंबत्तूर

अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल, कोयम्बतूर ने आचार्य श्री तुलसी के 29वें महाप्रयाण दिवस को विसर्जन दिवस के रूप में आयोजित किया। कार्यक्रम की शुरुआत तुलसी अष्टकम के द्वारा की गई। अध्यक्ष मंजू सेठिया ने उपस्थित बहनों का स्वागत व अभिनन्दन किया। बहन रुपकला भंडारी ने गुरुदेव तुलसी के अवदानों के बारे में बताते हुए कहा कि गुरुदेव तुलसी का नारी जाति के उत्थान में बहुत उपकार है। केंद्र द्वारा निर्देशित विसर्जन संकल्पों के साथ बहनों ने गुरुदेव को श्रद्धा सुमन अर्पित किया। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री सुमन सुराणा ने किया।

हनुमंतनगर, बैंगलोर

गणाधिपति, युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी के 29वें महाप्रयाण दिवस (विसर्जन दिवस) के उपलक्ष्य में 'एक शाम तुलसी के नाम' भजन संध्या का भव्य आयोजन साध्वी पुण्ययशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन, हनुमंतनगर में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के पावन मंत्रोच्चार से हुई। इसके पश्चात राजराजेश्वरीनगर से पधारे गायक देवेंद्र नाहटा एवं गुलाब बांठिया तथा हनुमंतनगर से मोहित दक व महाश्रमण सुर संगम भजन मंडली के सदस्यों द्वारा गुरुदेव तुलसी को समर्पित अनेक भावपूर्ण भजनों की सुमधुर प्रस्तुतियों ने संपूर्ण वातावरण को भक्तिमय बना दिया। उपस्थित श्रद्धालुओं ने इन गीतों के माध्यम से आचार्य तुलसी को अपनी भावांजलि अर्पित की।

साध्वी पुण्ययशा जी ने भी भावगर्भित गीतिका का संगान कर श्रद्धा के स्वर में अपनी भावना व्यक्त की। इस सफल आयोजन को साकार रूप देने में सभा अध्यक्ष गौतम दक, सभा मंत्री हेमराज मांडोत, महिला मंडल पूर्व अध्यक्ष मंजू दक, परिषद अध्यक्ष कमलेश झाबक, किशोर मंडल संयोजक जिनेश धोका, सहसंयोजक नीव चौधरी सहित अनेक कार्यकर्ताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम का सफल संचालन सन्नी रांका ने किया तथा अंत में परिषद मंत्री संदीप चौधरी ने सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में श्रावक-श्राविका समाज की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

विजयनगर

गणाधिपति आचार्य श्री तुलसी के 29वें महाप्रयाण दिवस के अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर द्वारा भव्य भक्ति संध्या एवं नूतन सातवीं आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं डेंटल केयर तथा आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल के दानदाताओं के सम्मान का कार्यक्रम कासिया भवन ऑडिटोरियम, विजयनगर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नवकार मंत्र के मंत्रोच्चार से हुआ, तत्पश्चात विजय स्वर संगम द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। सूरत से समागत सुप्रसिद्ध भजन गायिका अभिलाषा बांठिया ने अपने भावपूर्ण और मधुर भजनों के माध्यम से उपस्थित जनसमूह को भक्ति में सराबोर कर दिया। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने स्वागत उद्बोधन में सभी अतिथियों व दानदाताओं का आभार व्यक्त किया तथा एटीडीसी अनुदानकर्ताओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। उन्होंने बताया कि यह सातवां डायग्नोस्टिक सेंटर, बेंगलुरु समाज एवं तेयुप विजयनगर के समर्पण का प्रतीक है। इस अवसर पर अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने तेयुप विजयनगर को रिकॉर्ड सातवीं एटीडीसी इकाई प्रारंभ करने पर हार्दिक बधाई दी और बेंगलुरु के दानदाताओं के संघीय समर्पण की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद परिवार, विजयनगर तेरापंथ सभा अध्यक्ष मंगल कोचर एवं उनकी टीम, तेयुप प्रबंध मंडल, तेयुप पूर्व अध्यक्षगण, कार्यकारिणी सदस्यगण, प्रायोजक परिवार, एवं विजयनगर-बेंगलुरु समाज के अनेक सदस्य उपस्थित रहे।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 जुलाई - 13 जुलाई, 2025

संक्षिप्त खबर

पारिवारिक परंपरा है हमारी सांस्कृतिक धरोहर

पर्वत पाटीया। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेयुप पर्वत पाटिया द्वारा आयोजित व्यक्तित्व विकास कार्यशाला में परिवार प्रशिक्षण का सूत्र साध्वीश्री द्वारा प्रदान किया गया। साध्वीश्री ने अपने संबोधन में कहा कि 'आज संवेग नियंत्रण (भावनात्मक संतुलन) की परम आवश्यकता है। इसके अभाव में परिवार और समाज में अनेक समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं।' उन्होंने कहा कि भारत में पारिवारिक परंपरा हमारी सांस्कृतिक धरोहर है, और यह हमारा सौभाग्य है। आज की आवश्यकता है कि परिवार में बड़े-बुजुर्गों का सम्मान किया जाए, जिनकी बदौलत हमें संस्कारों का अमूल्य खजाना प्राप्त हुआ है। भावी पीढ़ी दिशाहीन न हो, इसके लिए अभिभावकों को सजग रहकर बच्चों को अच्छे संस्कारों से संपन्न करना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी अतुलयशाजी, साध्वी डॉ. राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्यप्रभाजी और साध्वी शौर्यप्रभाजी ने सामूहिक संगान के माध्यम से आध्यात्मिक मंगलकामनाएं प्रकट कीं। कार्यक्रम के अंत में तेयुप मंत्री अशोक कोचर ने सभी का आभार व्यक्त किया। सभा के संगठन मंत्री एवं जैन संस्कारक पवन कुमार बुच्चा ने कार्यक्रम का संचालन कुशलतापूर्वक किया।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट-2025 का आयोजन

गुवाहाटी। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) द्वारा आयोजित अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट–2025 का जिला स्तरीय कार्यक्रम अणुव्रत समिति, गुवाहाटी के तत्वावधान में तेरापंथ धर्मस्थल में आयोजित हुआ। प्रतियोगिता का मुख्य विषय था — 'संविधान की धार, मर्यादाओं का हो आधार', जिसमें निबंध, कविता, चित्रकला, भाषण व गायन आदि प्रतियोगिताओं के माध्यम से विद्यार्थियों ने सहभागिता की कार्यक्रम में गुवाहाटी के 1500 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया, जबकि कामरूप जिले की 8 से अधिक प्रमुख स्कूलों के स्कूल स्तरीय विजेता विद्यार्थी जिला स्तर पर प्रतिस्पर्धा हेतु उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत गीत वाचन से हुआ, जिसमें समिति के निवर्तमान अध्यक्ष बजरंगलाल डोसी व अन्य सदस्य शामिल हुए। अणुव्रत आचार संहिता का वाचन असम-त्रिपुरा प्रभारी छत्तरसिंह चौरड़िया ने किया। अध्यक्ष बजरंग बैद ने बच्चों, शिक्षकों और परिजनों का स्वागत किया। प्रतियोगिता प्रभारी रंजू बड़ड़िया ने ACC की जानकारी दी। निर्णायक मंडल में सीए रतनलाल अग्रवाल, पुष्पा सोनी, राहुल अग्रवाल, विनोद शर्मा एवं विनीत चिंडालिया शामिल थे, जिनका सम्मान साहित्य भेंट कर किया गया। विजेता प्रतिभागियों को मोमेंटो व उपहार प्रदान किए गए। कार्यक्रम का संचालन सुमिता बरड़िया और राखी बैंगानी ने तथा धन्यवाद ज्ञापन मंत्री संजय चौरड़िया ने किया। आयोजन को सफल बनाने में सभी पदाधिकारियों, सदस्यों एवं संघीय संस्थाओं का पूर्ण सहयोग रहा।

❖ देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर करता है। यदि बाल पीढ़ी अच्छी होगी तो देश का भविष्य भी सुनहरा बन सकेगा।

– आचार्य श्री महाश्रमण

❖ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।

– आचार्य श्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

■ **हैदराबाद।** मीणा-विजय श्रीमाल के नूतन गृह का मंगल शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा जैन संस्कारक ललित लुनिया और राहुल गोलछा ने विधि विधान पूर्वक सम्पन्न करवाया।

नवीन प्रतिष्ठान

■ **जयपुर।** निकुंज जैन सुपुत्र प्रकाश कोठारी के नव प्रतिष्ठान 'जैन कंप्रेसर पॉइंट' का भव्य शुभारम्भ संस्कारक राजेश जैन ने जैन संस्कार विधि से सम्पन्न करवाया।

पाणिग्रहण संस्कार

■ **उदयपुर।** आनन्द कुमार वया की सुपुत्री अदिति का शुभ विवाह शशिकांत लिखामावत के सुपुत्र पार्थ के संग तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर के अंतर्गत मुख्य संस्कारक सुबोध दुगड़, सहयोगी पंकज भंडारी एवं मनोज लोढ़ा द्वारा पूर्ण विधि विधान सम्पन्न करवाया गया। ज्ञातव्य हो कि वर-वधु दोनों के ही परिवार तेरापंथ समाज से नहीं होते हुए भी विवाह संस्कार जैन संस्कार विधि से आयोजित करने के लिए सहमति प्रदान की।

'गुड फ्लावर्स नीड गुड शावर' कार्यशाला का आयोजन

चेन्नई।

साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों, प्रशिक्षिकाओं और अभिभावकों के लिए कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ विद्यालय, माधावारम में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ माधावराम ट्रस्ट, चेन्नई द्वारा किया गया।

साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा - बच्चे दूध की तरह होते हैं, उन्हें जैसा माहौल मिलता है, वे वैसे ही ढल जाते हैं। यदि उन्हें सही संस्कारों की खाद मिले तो वे दूध से दही की तरह जम जाते हैं, और यदि गलत संस्कार मिले तो दूध में नींबू की तरह फट सकते हैं। साध्वी संगीतप्रभा जी ने ज्ञानार्थियों से तत्व संबंधी प्रश्न पूछे, जिनका ज्ञानार्थियों ने उत्साहपूर्वक उत्तर दिया। साध्वी भव्ययशा जी ने अभिभावकों से कहा कि बच्चों को ABCD से tackle करना चाहिए। उन्होंने ज्ञानार्थियों को रोचक गेम्स खिलाए और योग करवाया। साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने कायोत्सर्ग करवाया। कार्यशाला में लगभग 60 ज्ञानार्थी, 25 प्रशिक्षिकाएँ एवं अन्य धर्मप्रेमी श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। विजेताओं को श्री जैन श्वेतांबर माधावरम ट्रस्ट की ओर से पुरस्कृत किया गया तथा ज्ञानार्थियों को मासिक उपहार श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, चेन्नई द्वारा वितरित किए गए।

इस अवसर पर सभा अध्यक्ष अशोक खतंग, माधावरम ट्रस्ट बोर्ड के अध्यक्ष घीसूलाल बोहरा, ज्ञानशाला प्रभारी राजेश सांड, सुरेश रांका, प्रवीण सुराणा एवं श्रावक समाज की गरिमामय उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी संगीतप्रभा जी ने किया।

'तेरापंथ मेरापंथ' कार्यशाला सम्पन्न

गंगाशहर।

आशीर्वाद भवन में 'तेरापंथ मेरापंथ' प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। शुभारंभ में गंगाशहर की उपासक बहनों द्वारा 'हम बने उपासक' गीत प्रस्तुत किया गया। उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी ने आचार्य श्री भिक्षु को 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की भावना का सजीव प्रतीक बताया और कहा कि तेरापंथ अज्ञानी को ज्ञानी बनाता है। उन्होंने कहा कि प्रतिभागी इस प्रशिक्षण से मिले ज्ञान को अपने क्षेत्रों में प्रसारित करें।

प्रमुख प्रशिक्षक निर्मल नौलखा ने कहा कि उपादान हर व्यक्ति में होता है, लेकिन जागरण के लिए निमित्त आवश्यक है, और उपासक श्रेणी एक सशक्त निमित्त है। इस सत्र में महासभा के कार्यकारी सदस्य भैरूदान सेठिया, सभा मंत्री जतन संचेती व राजेंद्र सेठिया ने भी अपने विचार साझा किए। संचालन संजू लालाणी ने किया।

दूसरे सत्र में परीक्षण व वक्तव्य प्रस्तुतियाँ हुईं, जिनमें प्रतिभागियों ने तेरापंथ व आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों पर चर्चा की। उपासक नौलखा ने प्रश्नों के सरल उत्तर देकर जिज्ञासाओं का समाधान किया। शनिवार को सामायिक-साधना, 'तेरापंथ प्रबोध' का संगान और रात्रि तक प्रस्तुति क्रम चला। कार्यक्रम का समापन मंगलपाठ से हुआ।

दूसरे दिन उपासक नौलखा ने स्वरचित गीत से शुरुआत की। उन्होंने सम्यक्त्व को अंक और आचरण को शून्य बताते हुए कहा कि सम्यक्त्व के बिना आचरण का कोई मूल्य नहीं। छोटे प्रश्नों के सारगर्भित उत्तरों से प्रतिभागियों को दिशा मिली। कार्यशाला का आयोजन जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा एवं तेरापंथ सभा गंगाशहर द्वारा किया गया। इसमें 53 प्रतिभागियों ने भाग लिया। सभा कोषाध्यक्ष रतनलाल छल्लाणी ने आभार व्यक्त किया। उपाध्यक्ष नवरतन बोथरा व टीम ने व्यवस्था को सफलतापूर्वक संभाला। कार्यक्रम के अंत में उपासक श्रेणी में प्रवेश हेतु परीक्षा आयोजित की गई, जिसमें गंगाशहर से 10 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष पर विशेष

कल्पतरु पुरुष – आचार्य श्री भिक्षु

● डा. मुनि मदन कुमार ●

आचार्य भिक्षु का नाम सिद्ध मंत्र है, जिसके पीछे वैराग्य और साधना बोल रही है। वे जीवनपर्यंत परमार्थ की साधना में अप्रमत्त भाव से लगे रहे, जिससे वे ज्योतिपुंज बन गए। लाखों श्रद्धालुओं के आस्था-धाम बन गए। उन्होंने समुद्र-मंथन किया और रत्न निकाले। ऐसा कार्य कोई नहीं कर सका। वे जीवन में कभी नहीं चूके। उनका दर्शन सर्वथा निरापद और निर्विवाद है। उनकी जोड़ कला बेजोड़ है।

भक्त हृदय से स्वर निकला था – वे तीर्थंकर-केवली के समान हैं तथा उनकी जोड़ निर्युक्ति-साहित्य के समान है। अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी ने जीवन की संध्या में अपने अनुभव-स्वर सुनाते हुए कहा था – 'परमपूज्य भिक्षु स्वामी भगवान आदिनाथ जैसे हुए हैं। उन्होंने ऐसी न्यायपूर्ण व्यवस्था की है, जो भगवान आदिनाथ की याद दिला देती है।' वे मर्यादा पुरुषोत्तम थे। वे साहसी और महानतम पुरुष थे। सारे संसार के हितैषी और कल्याण की कामना करने वाले थे। उन्होंने न सुविधाओं का सहारा लिया और न कठिनाइयों से भय खाया। उनकी कष्ट-सहिष्णुता बेजोड़ थी। उन्होंने प्रतिस्रोत में चलने का संकल्प किया और धर्म का मौलिक स्वरूप जनता-जनार्दन को बताया। 33 वर्ष की युवावस्था में धर्म क्रांति की और सत्य की प्रतिष्ठा की।

सत्य सारभूत तत्त्व है। उस पर चलने वाला अजर-अमर हो जाता है। आचार्य भिक्षु का जीवन इसका प्रेरक निदर्शन है। उनकी आत्म-निष्ठा और सत्य-निष्ठा से प्रभावित होकर शोभजी श्रावक ने उनके नाम की सुंदरतम व्याख्या कर डाली। 'भीखणजी' शब्द के चार अक्षरों की विवेचना करते हुए उन्होंने लिखा – 'भी' का अर्थ है भिक्षु व्रत ग्रहण करना, 'ख' का अर्थ है क्षमा रस को पीना, 'न' का अर्थ है सावद्य कार्यों को छोड़ना और 'जी' का अर्थ है इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना। उनकी यह मीमांसा अत्यंत हृदयस्पर्शी है। अपने उद्गारों को स्वर देते हुए उन्होंने लिखा –

'भी' कहतां भिक्षु व्रत लीधा, 'ख' कहतां खिम्या रस पीध जी।
'न' कहतां सावद काम निवार्या, 'जी' कहतां इंद्रयां नै जीत जी।।

चार सर्वोत्तम धर्म है। आचार्य भिक्षु की आचार-निष्ठा अद्वितीय थी। वे निरतिचार चारित्र के प्रतिष्ठापक थे। उनकी समता और सहिष्णुता अखंड थी। उनके उन्नत संस्कार धर्मसंध में परंपरा बन गए। श्रावक महेशदास ने इस सच्चाई को उजागर करते हुए अत्यंत चुनौतीपूर्ण शब्दों में लिखा –

वीर गणधर तणी पूज भिक्षु तणी, एक सरधा कछू फेर नाहीं।
दूसरो मोय बतायद्यो भविकजन, शुद्ध साधू इण भरत मांही।।

आचार्य श्री भिक्षु सिद्धयोगी थे। वैरागी और आत्मार्थ पुरुष थे। उन्होंने पंचम आरे में चतुर्थ आरे की रचना कर दी। वे अवतारी पुरुष थे। उनका गुणोत्कीर्तन करते हुए पूज्य आचार्य श्री तुलसी ने भावोत्कर्ष के साथ लिखा –

दुःषम आरे भरत मझारे, प्रगट्या भिक्षु स्वाम।
अरहंत-देव ज्यूं धर्म दिपायो, पायो जग में नाम।।

आचार्य श्री भिक्षु धर्म-प्रवर्तक और समृद्ध साहित्यकार हैं। उन्होंने धर्म को पुनर्जीवित किया और साहित्य की रचना की। धर्म के प्राण तत्त्व वीतरागता की प्रतिष्ठा उनके साहित्य में देखी जा सकती है। जिनवाणी के प्रति उनका समर्पण अपूर्व कहा जा सकता है। ऐसी सत्यान्वेषी और सद्धर्मजीवी महापुरुष संसार में विरल होते हैं। उनकी विरल विशेषताओं से प्रभावित होकर एक मनस्वी व्यक्ति ने लिखा –

सुख वैभव भावी पीढ़ी को, कालकूट तुम स्वयं पी गए।
मृत्यु भला क्या तुम्हें मारती, मरकर भी तुम पुनः जी गए।।
गंग जमुन सा निर्मल जीवन, सत्य शोध के प्रबल पुजारी।
मरघट में भी अलख जगाया, अलबेले बाँके अवतारी।।

आचार्य श्री भिक्षु का संपूर्ण जीवन अप्रमत्त जीवन है। आदि से लेकर अंत तक उनका जीवन मंगलमय है। जीवन के संध्याकाल में उनकी निर्मलता अनुत्तर हो गई थी। बेले के तप में स्वयं ने संथारा पचखा था। प्रत्यक्षदर्शी मुनि श्री वेणीरामजी ने लिखा – 'अंत समय में आचार्य श्री भिक्षु को अवधि ज्ञान हुआ, इसमें मुझे शंका नहीं है। निश्चित रूप में केवल ज्ञानी ही बता सकते हैं।' सात प्रहर के अनशन में सिरियारी में महाप्रयाण कर वे इतिहास-पुरुष बन गए।

आचार्य श्री भिक्षु इस युग में 'कल्पतरु पुरुष' बन गए। उनके व्यक्तित्व और कर्तृत्व की झलक पाकर इस सच्चाई का अनुभव किया जा सकता है। उनकी निष्कारण करुणा उन्हें 'कल्पतरु पुरुष' के रूप में प्रतिष्ठित करती है। जीवन पर्यंत प्रतिस्रोत में चलते रहे, विरोध को झेलते रहे और जनोपकार करते रहे। इसीलिए उन्हें 'कल्पतरु पुरुष' कहना समीचीन लगता है। कवि-हृदय की अनमोल पंक्तियां हैं –

कारण बिन जग सूं करै, आठ पोहर उपगार।
जांणीजे सुरतरु जिकै, मानव लोक मझार।।

अगले अंक में क्रमशः ...

क्रांति के पुरोधा आचार्य भिक्षु

● साध्वी सरलयशा ●

जीवन की पारी के हर पायदान को जिंदादिली और शान-शौकत से जीने वाले महामना आचार्य भिक्षु को प्रणाम। उनके द्वारा जिया गया हर लम्हा सार्थक और सुकून देने वाला साबित हुआ। 'ड्रेगन ब्लड ट्री' पौधे की नाई आचार्य भिक्षु अपने फौलादी साहस और प्राणवान दिव्य साधुता के लिए दुनिया भर में विख्यात हुए। उनके स्मरण मात्र से जिज्ञासु हृदय झनझना उठता है। आस्था के आलम में परेशानियों का हिमगिरि पिघलता नजर आता है। तो जानें, उनके पारदर्शी व्यक्तित्व से जुड़े कुछेक तथ्यों का विमर्श—

धार्मिक संगठन के प्रणेता

संत भीखण एक धार्मिक संगठन के आचार्य थे। इसके बावजूद वे एक समाज सुधारक के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने सटीक शब्दों में समाज में पलने वाली कुरूढ़ियों पर प्रहार किया। तेरापंथ धर्म संघ के आद्यप्रणेता कहलाए, पर जैन धर्म में अठारहवीं सदी के सर्वोच्च आध्यात्मिक क्रांतिकारी संत के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

धर्मगुरु होने के नाते वे भगवान महावीर के कालातीत सिद्धांतों पर चलने के लिए कटिबद्ध थे। कष्टों की परवाह किए बिना वे सत्यमार्ग पर डटे रहे। अनुकूलता के चक्रव्यूह को तोड़कर सत्पथ पर चलने का दृढ़ निश्चय किया। स्वात्म-वचनबद्धता और जीवनी पर अटूट आस्था को प्राणवान रखने के लिए अपने गुरु का स्नेहिल साया छोड़, बुलंद हौसले के साथ चल पड़े अनचिन्ही राहों पर। कवि की पंक्तियां फिर से मुखर हो उठीं—

'मंजिल उन्हीं को मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है।
परों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है।।'

क्रांति का मकसद

हाल ही में घटित 'ऑपरेशन सिंदूर' की भांति संत भीखण की धार्मिक क्रांति शिथिलाचार के विरुद्ध उठाया गया एक सटीक और साहसिक कदम था। पहलगांव में हुए आतंकी हमले की नाई संत भीखण को एकाएक रात्रि में तपने वाले प्रचंड ताप (ज्वर) से उनके भीतर सत्य क्रांति की तरंग उठी, जो लहर का रूप धरती हुई मचल उठीं दरिया बनने के लिए। वे संकल्पित हुए। जिनशासन की विराटता को उजागर करने वाला उनका यह फौलादी निर्णय अमूल्य था—और समय की मांग भी कुछ ऐसी ही रही, जिसने उनके भीतर अपराजेय पौरुष भर दिया।

तेरापंथ का उद्भव

कालक्रम में भीखणजी ने अपने संगठन का नाम 'तेरापंथ धर्म संघ' रखा। जिसकी आधारशिला बने मौलिक तेरह नियम और कवि के बोल। सुनते ही उन्होंने वंदन मुद्रा में प्रणत होकर कहा—'हे प्रभो! यह तेरापंथ' — 'यह प्रभु का पंथ है। हम तो इस पर चलने वाले पथिक हैं।'

समर्पण भाव से की गई तेरापंथ की प्रतिष्ठा उनकी निस्पृह चेतना की आवाज थी, जिसमें न पंथ का व्यामोह, न गुरु का मोह, न चेले का आकर्षण, न किसी जन-अपवाद की परवाह। बस एक ही धुन, एक ही लगन थी—

'मर पूरा देस्यां, आत्मा का कारज सारस्यां।'

आशय स्वरूप, आत्मविशुद्धि के ग्राफ को ऊंचाइयों पर ले जाना ही उनका प्रण था। जिसके बाबत कवि की ये पंक्तियां साकार हो उठीं—

"तूफान उसे क्या रोकेंगे, जिसने चलने से प्यार किया।
पतझड़ के ढीले हाथों से, सावन अपमानित क्या होगा?
बूंदों के आंख दिखाने से, बादल अपमानित क्या होगा?
सागर की तरह जो गहरा है, आकाश पर जिसका पहरा है।
गर्मी की तपन, सर्दी की सितम, सहकर जिसने उपहार दिया।।"

फौलादी संकल्प और जज्बे से आगे बढ़े। कभी हार नहीं मानी। कई मौके ऐसे भी आए जब लोगों का सकारात्मक साथ नहीं मिला, पर निराश न होने वाले उनके बुलंद हौसले ने लक्ष्य को कभी ओझल न होने दिया। इसी गुरुमंत्र से तेरापंथ का मार्ग प्रशस्त हुआ। ढाई सौ से भी अधिक बीते काल की अवधि में संघ की गुणवत्ता एवं गरिमा कभी धूमिल नहीं हुई। तपः साधना से भावित उनका संघ आज भी विकास के मार्ग पर गतिशील है।

दिल को छूने वाले बोल

'तोलमोल के बोल, मन के दरवाजे खोल'—इस उक्ति को उजागर करने वाले उनके हर बोल मन्तव्य और सिद्धांत, अध्यात्म और तर्क की कसौटी पर उद्गिरित हुए। उसका आशय न केवल श्रद्धालुओं के गले उतरता, अपितु विरोधियों को भी आंदोलित करता। विरोधों के बीच सामंजस्य स्थापित करने वाले उनके उपदेश हर एक दिल को छूने का माद्दा रखते थे।

वे समयज्ञ थे। अवसर के लिहाज से उनके सटीक बोल जनमानस में प्रतिष्ठित होते गए। सिद्धांतों की बारीकियों को भी सुगम शैली में समझाने की अनूठी कला से दिन-प्रतिदिन विरोधियों की संख्या घटती गई और श्रद्धाप्रणत होकर अनुयायी की श्रेणी में तब्दील होती गई। उनकी वाक्-संपदा बेजोड़ थी। उनकी वाणी से कबीर के बोल कृतार्थ हो उठे—

"ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरों को शीतल करे, आप ही शीतल होय।।"

भिक्षु चेतना वर्ष

ऋषि परंपरा के संपोषक, अध्यात्म जगत के सुमेरू युगप्रधान, महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी भैक्षवगण के एकादमाधिशास्ता हैं। उन्होंने आचार्य भिक्षु को वैज्ञानिक युग में अपूर्व भविष्यदृष्टा के रूप में आलोकित किया है। श्रद्धाप्रणति करते हुए आचार्य महाश्रमणजी ने तेरापंथ संघ के आद्यप्रणेता आचार्य भिक्षु का तीन सौवां जन्म शताब्दी वर्ष 'भिक्षु चेतना वर्ष' के रूप में मनाने की उद्घोषणा की है। जिसका आगाज़ 8 जुलाई 2025 से होकर पूरे वर्षभर त्याग, तप और गहन मंथन के साथ किया जाएगा। इस वर्ष का सारा फोकस आचार्य भिक्षु के सूक्ष्म सिद्धांतों को गहराई से समझने और जीने का अवसर देगा। सिद्धांतों को समझने में पूज्यवरों की कृतियां और उपदेश महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। जो सिद्धांतों की गहराई को समझने में सक्षम नहीं हैं, उनके लिए उनका नाम सुमिरन—'ॐ भिक्षु' का जप नई ऊर्जा और वांछित दिशादर्शन होगा। आचार्य भिक्षु के नाम में ही शक्ति है, जो हमें ऊर्जा संपन्न बनाती है, मनोरथ पूर्ण करती है। श्रद्धा से भीगा जिज्ञासु अपने सारे वांछित कार्यों को सुगमता से संपादित करने की अर्हता हासिल कर लेता है।

फिर से जानें, आचार्य भिक्षु ने जैन शासन की असीम शक्ति को उजागर किया। जिज्ञासु को नई राह प्रदान की। धर्म–अधर्म की रेखाओं के बीच अभेद की दीवारों को ढहाया और दिया तेरापंथ धर्म संघ के रूप में आत्मोन्नयन का राजमार्ग।

पूज्यपाद की 300वीं जन्मशताब्दी पर श्रद्धासिक्त अनगिन प्रणिपात, दो पंक्तियों के साथ—

'प्रणाम उस महामना को जिनका प्रभाव हमारे प्राणों में है।
प्रणाम उस महाज्योति को जिनकी रश्मियां हमारे दिलों में हैं।।'

संबोधि

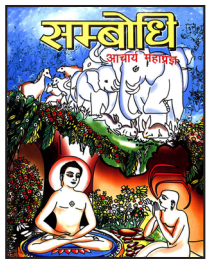

मनः प्रसाद

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

आनंद का स्रोत बाहर नहीं है। हमारी आत्मा ही अनंत आनंद से संपन्न है। चित्त, मन और अध्यवसाय जब आत्मोन्मुख होते हैं तब आनंद का उद्भव होता है। जब वे बाहर घूमते है तब आनंद का आभास हो सकता है, किन्तु यथार्थ आनंद की अनुभूति नहीं हो सकती। आनंद या मानसिक प्रसन्नता के लिए इनका आत्मा में विलीन होना आवश्यक है।

५. आत्मस्थित आत्महित, आत्मयोगी ततो भव।
आत्मपराक्रमो नित्यं, ध्यानलीनः स्थिराशयः॥

तू आत्मा में स्थिर, आत्मा के लिए हितकर, आत्मयोगी, आत्मा के लिए पराक्रम करने वाला, ध्यान में लीन और स्थिर आशय वाला बन।

महावीर मानसिक आनंद की सर्वोच्च प्रक्रिया प्रस्तुत कर रहे हैं। जब तक मन चित्त और अध्यवसाय बाहर के आकर्षणों से मुक्त नहीं होते तब तक मानसिक प्रसाद का स्रोत प्रकट नहीं हो सकता। उसके समस्त प्रयास गज स्नानवत् होंगे। चित्त-शुद्धि सर्वप्रथम है। जो साधक ध्यान साधना में प्रविष्ट होना चाहता है उसे यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि मनःशुद्धि के बिना ध्यान साधना का प्रयोजन सफल नहीं होता। वह इधर-उधर कितनी ही छलांग मारे, अंततोगत्वा अपने को वहीं खड़ा पाएगा। मन की प्रसन्नता का पहला पाठ है-मनःशुद्धि। और दूसरा पाठ है-मन को बाहर से हटाकर चेतना के साथ संयुक्त करना।

श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा.... 'अब तू स्वयं कुछ नहीं है। जो कुछ करना है, वह मुझे समर्पित करके कर। तू प्रत्येक क्रिया में देख कि मैं नहीं हूं, बस, जो कुछ है वह सब श्रीकृष्ण है।'

अष्टावक्र ने जनक से कहा-'तू राज्य कर, पर अब यह राज्य तेरा नहीं है। तू अपना सर्वस्व मुझे दे चुका है। यह मेरा कार्य है और तुझे करना है। ऐसा मानकर कर।'

साधक के लिए 'मैं' को तोड़ना अनिवार्य है। मैं करता हूं, मैं खाता हूं, मैं देता हूं आदि। मैं को तोड़ने के लिए यह सरलतम उपाय है। वह बीच में न आए। सब कुछ है वह गुरु है, प्रभु है। महावीर इसी भावना को प्रस्तुत कर रहे हैं-मेघ ! तू अपने मन, चित्त, अध्यवसाय को आत्मा में नियोजित कर, समस्त क्रियाएं करता हुआ आत्मा को सामने रख। जीवन और मृत्यु तथा इन्द्रियों के प्रवृत्तिकाल में आत्मा को एक क्षण भी विस्मृत मत कर। आत्मा की विस्मृति दुःख है और स्मृति सुख। प्रवृत्ति का स्रोत बदल जाने पर सब कुछ बदल जाएगा। अब तक जो कुछ करता आया था उसमें शरीर, मन, वाणी और इन्द्रियों की प्रधानता थीं और अब आत्मा प्रधान हो जाएगी। बाहर की प्रवृत्ति चंचलता लाती है और अंतर् से दूर करती है। जीवन का परम सार-सूत्र है-आत्म-स्थित होना, आत्मा को सामने रखकर प्रवृत्त होना।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री मलूकांजी (डेह) दीक्षा क्रमांक 122

साध्वीश्री बड़ी तपस्विनी हुई। दीक्षा क्रम में छहमासी तप करने वाली साध्वियों में आपका क्रम सर्वप्रथम है।

आपने संवत 1914 में एक छहमासी तथा 1915 में एक चौमासी तप साध्वी दीपांजी के साथ में किया। ख्यात में आपकी तपस्या का उल्लेख इस प्रकार है- उपवास अनेक, 2/132, 3/30, 4/10, 5/14, 8/4, 10/4, 11/1(आछ के आगार से) 13/1(आछ.) 15/1, 21/1, 30/2 (आछ.) 30/7 (पानी के आगार से) 32/1, 35/1, 41/1, 45/1, 58/1, चारमासी/2 (आछ.), छहमासी/2 (आछ के आगार से)।

- साभार: शासन समुद्र -

श्रमण महावीर

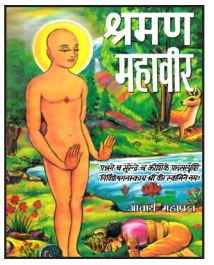

अतीत का सिंहावलोकन

'गौतम! क्या दासप्रथा बुरी नहीं है? क्या पशु-बलि बुरी नहीं है? क्या शूद्र के प्रति घृणा बुरी नहीं है? क्या नारी जाति के प्रति हीनता का भाव बुरा नहीं है? आज का समाज न जाने कितनी बुराइयों का भार ढो रहा है। मैं इन बुराइयों को पत्र, पुष्प और फल मानता हूं। बुराई की जड़ है मिथ्या दृष्टिकोण। गौतम! कुछ धर्माचार्य अग्र के शोधन में विश्वास करते हैं। मैं मूल और अग्र दोनों के शोधन की अनिवार्यता प्रतिपादित करता हूं। तुम जाओ और इस पर गहराई से विचार करो'- यह कहकर भगवान् मौन हो गए। गौतम अतीत से हटकर भविष्य की कल्पना में खो गए।

तत्कालीन धर्म और धर्मनायक

भारतीय क्षितिज में धर्म का सूर्य सुदूर में उदित हो चुका था। उसका आलोक जैसे-जैसे फैला वैसे-वैसे जनमानस आलोकित होता गया। आलोक के साथ गौरव बढ़ा और गौरव के साथ विस्तार।

भारतीय धर्म की दो धाराएं बहुत प्राचीन हैं- श्रमण और वैदिक। श्रमण धारा का विकास आर्य-पूर्व जातियों और क्षत्रियों ने किया। वैदिक धारा का विकास ब्राह्मणों ने किया। दोनों मुख्य धाराओं की उप-धाराएं अनेक हो गईं। भगवान् महावीर के युग में तीन सौ तिरेसठ धर्म-सम्प्रदाय थे यह उल्लेख जैन लेखकों ने किया है। बौद्ध लेखक बासठ धर्म-सम्प्रदायों का उल्लेख करते हैं। जैन आगमों में सभी धर्म-सम्प्रदायों का चार वर्गों में समाहार किया गया है-

१. क्रियावाद

२. अक्रियावाद

३. अज्ञानवाद

४. विनयवाद

भगवान् महावीर गृहस्थ जीवन में इन वादों से परिचित थे। इनकी समीक्षा कर उन्होंने क्रियावाद का मार्ग चुना था।

भगवान् महावीर का समय धार्मिक चेतना के नव-निर्माण का समय था। विश्व के अनेक अंचलों में प्रभावी धर्म-नेताओं के द्वारा सदाचार और अध्यात्म की लौ प्रज्वलित हो रही थी। चीन में कनफ्युशस और लाओत्से, यूनान में पैथागोरस, ईरान में जरस्थु, फिलस्तीन में मूसा आदि महान् दार्शनिक दर्शन के रहस्यों को अनावृत कर रहे थे। भारतवर्ष में श्वेतकेतु, उद्दालक, याज्ञवल्क्य आदि ऋषि औपनिषदिक अध्यात्म का प्रचार कर रहे थे। श्रमण परम्परा में अनेक तीर्थंकर विचार-क्रान्ति का नेतृत्व कर रहे थे। उनमें मुख्य थे-मक्खलिपुत्त गौशालक, पूरणकश्यप, पकुधकात्यायन, अजितकेशकबली और संजयवेलठ्ठिपुत। भगवान् बुद्ध ने महावीर के दस वर्ष बाद बोधि प्राप्त की थी। भगवान् महावीर ने ई० पू० ५५७ में कैवल्य प्राप्त किया और भगवान् बुद्ध ने ई. पू. ५४७ में बोधि प्राप्त की। भगवान् पार्श्व का निर्वाण हो चुका था। उनकी परम्परा का नेतृत्व कुमारश्रमण केशी कर रहे थे।

भगवान् पार्श्व का धर्म भारतवर्ष के विभिन्न अंचलों में प्रभावशाली हो चुका था। भगवान् नागवंशी थे। अनेक नागवंशी राजतंत्र और गणतंत्र उनके अनुयायी थे मध्य एवं पूर्वी देशों के व्रात्य क्षत्रियों में उनका धर्म लोकप्रिय हो चुका था। वैशाली और वैदेह के वज्जीगण भगवान् पार्श्व के परम भक्त थे। भगवान् महावीर का परिवार भगवान् पार्श्व के धर्म का अनुयायी था। भगवान् बचपन से ही भगवान् पार्श्व और उनकी धर्म-परम्परा से परिचित थे। भगवान् का गृहत्याग श्रमणधर्म की प्राची में बाल-सूर्य के आलोक का संचार था। भगवान् के द्वारा तीर्थ-प्रवर्तन श्रमणधर्म के पुनरुत्थान का अभिनव अभियान था।

भगवान् महावीर भगवान् पार्श्व के प्रति अत्यन्त श्रद्धानत थे। वे भगवान् पार्श्व को पुरुषादानीय (लोकनेता) के सम्मान्य संबोधन से सम्बोधित करते थे। किन्तु भगवान् पार्श्व की परम्परा में, कुछ कारणों से, लक्ष्य के प्रति शिथिलता आ गई थी भगवान् महावीर द्वारा तीर्थ-प्रवर्तन का अर्थ था-पार्श्व की परम्परा का नवीनीकरण ।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

समता का शास्त्र

इसमें वनस्पतिकाय के जीवों की मनुष्य के साथ तुलना सुन्दर भाषा में की गई है जैसे-

इर्मपि जाइधम्मयं, एयंपि जोइधम्मयं।
इमंपि वुड्ढिधम्मयं, एयंपि वुड्ढिधम्मयं।
इमंपि छिन्नं मिलाति, एयंपि छिन्नं मिलाति।

यह मनुष्य भी जन्मता है, यह वनस्पति भी जन्मती है। यह मनुष्य भी बढ़ता है, यह वनस्पति भी बढ़ती है। यह मनुष्य भी छिन्न होने पर म्लान होता है, यह वनस्पति भी छिन्न होने पर म्लान होती है।

दूसरा अध्ययन लोकविचय है। इसमें अनित्य अनुप्रेक्षा व अशरण अनुप्रेक्षा के सूत्र उपलब्ध हैं।

'अप्पं च खलु आउं इहमेगेसिं माणवाणं।'

इस संसार में कुछ मनुष्यों का आयुष्य अल्प होता है।

नालं ते तव ताणाए वा सरणाए वा।
तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा सरणाए वा ।।

वे स्वजन आदि तुम्हें त्राण या शरण देने में समर्थ नहीं हैं। तुम भी उन्हें त्राण या शरण देने में समर्थ नहीं हो।

प्रतिपक्ष भावना का आधार भी इसमें मिलता है– **लोभं अलोभेण दुगुंछमाणे**– लोभ को अलोभ से पराजित करनेवाला'।

मृत्यु के लिए सब स्थान और सब समय खुले हैं इस सच्चाई को अति संक्षेप में बतलाया गया है-

'णत्थि कालस्स णागमो'– 'मृत्यु के लिए कोई क्षण अनवसर नहीं है।' और भी बहुत-से सूक्त इस अध्ययन के मननीय हैं-

'उद्देसो पासगस्स णत्थि'–

द्रष्टा के लिए कोई निर्देश नहीं है।

'कुसले पुण णो बद्धे, णो मुक्के'–

कुशल न बद्ध होता है और न मुक्त होता है।

'एस वीरे पसंसिए, जे बद्धे पडिमोयए'–

वह वीर प्रशंसित होता है, जो बंधे हुए मनुष्यों को मुक्त करता है।

'मुणी मोणं समादाय, धुणे कम्मसरीरगं'–

मुनि ज्ञान को प्राप्त कर कर्मशरीर को प्रकम्पित करे।

'णारतिं सहते वीरे, वीरे णो सहते रतिं'–

वीर पुरुष न अरति को सहन करता है और न रति को।

'से हु दिट्ठपहे मुणी, जस्स णत्थि ममाइय'–

उसी मुनि ने पथ को देखा है, जिसके पास परिग्रह नहीं है।

'अलं कुसलस्स पमाएणं'–

कुशल को प्रमाद से क्या प्रयोजन?

'जे ममाइयमतिं जहाति से जहाति ममाइयं'–

जो परिग्रह की बुद्धि का त्याग करता है, वही परिग्रह को त्याग सकता है।

'अपरिण्णाए कंदति'–

त्याग नहीं करने वाला व्यक्ति क्रन्दन करता है।

'जेण सिया तेण णो सिया'– जिससे (सुख) होता है, उससे नहीं भी होता।

'आसं च छंदं च विगिंच धीरे'–

हे धीर! तू आशा और स्वच्छन्दता को छोड़।

'मदा मोहेण पाउडा'– मंद मनुष्य मोह से अतिशय रूप में आवृत रहते हैं। (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल
अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री आशारामजी (बालोतरा) दीक्षा क्रमांक 377

मुनिश्री उत्कट तपस्वी थे। आपने 6 साल एकान्तर और 6 साल बेले-बेले तप किया। बीच में सैंकड़ों बेले, तेले आदि तथा ऊपर में 41 दिन का तप किया। साढ़े उन्नीस वर्ष के संयम पर्याय में लगभग पौने दस वर्ष की तपस्या की। उनके तप की समग्र तालिका इस प्रकार है- उपवास/1367, 2/620, 3/119, 4/14, 5/25, 6/2, 7/2, 8/3, 9/1, 10/1, 11/2, 12/3, 13/1, 15/1, 25/1, 30/1, 31/1, 35/1, 41/1। तप के कुल दिन 3493 हुए, जिनके 9 वर्ष 8 महीने 13 दिन होते हैं। अन्त समय में 58 दिन संलेखना और 15 दिन अनशन के मिलाकर 73वें दिन अपना काम सिद्ध किया।

– साभार : शासन समुद्र –

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

भिक्षु : एक परिचय

'आचार्य भिक्षु' का जन्म सम्वत् १७८३ आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी, मंगलवार, मूल नक्षत्र में हुआ। आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी को सर्वसिद्धा त्रयोदशी कहा जाता है। तदनुसार उन्हें अपने चरम लक्ष्य की प्राप्ति में पूर्ण सफलता हुई थी। जब 'भिक्षु' गर्भ में आए तब माता दीपांबाई को स्वप्न में सुन्दर बलवान सिंह के दर्शन हुए।

'भिक्षु' के पिता का नाम शाह बल्लूजी और माता का नाम दीपांबाई था। भिक्षु के माता-पिता जैन गच्छवासी सम्प्रदाय के अनुयायी बताये गए हैं। कुल-गुरु होने के नाते भिक्षु का आवागमन पहले गच्छवासी सम्प्रदाय के साधुओं के यहां था। बाद में वे पोतियाबंध सम्प्रदाय के अनुयायी बने। फिर स्थानकवासी सम्प्रदाय के आचार्य रुघनाथजी के अनुयायी हुए।

भिक्षु की शादी छोटी अवस्था में हो गई। पर गृहस्थ जीवन उन्हें बांध नहीं पाया। उनकी पत्नी सुगुणी बाई भी दीक्षा लेने के लिए उद्यत हुई। ब्रह्मचर्य की साधना के साथ-साथ दोनों ने एक अभिग्रह और अंगीकार किया– जब तक प्रव्रज्या की अभिलाषा पूर्ण नहीं होगी तब तक दोनों एकांतर उपवास करेंगे।

उस साधना काल में ही सुगुणी बाई का देहांत हो गया। पर भिक्षु इस वियोग से दु:खी नहीं हुए अपितु और अधिक विरक्त हो गये। उन्होंने फिर से शादी करने का त्याग कर दिया और वे अपने आपको साधुत्व के लिए तैयार करने लगे।

क्या आप जानते हैं?

लोकी, खीरा, ग्वारपाठा, आंवला और हरा टमाटर आदि शाक की कोटि में आने वाले पदार्थों का रस सचित्त माना जाता है। उसमें पर्याप्त मात्रा में चीनी मिला दी जाए अथवा दो शाक के रस लगभग आधे-आधे मिला दिए जाएं तो मिलाने के बारह मिनट बाद वह अचित्त माना जा सकता है।

जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

सम्यक्त्व दीक्षा

जीवन में गुरु का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है। जब यह प्रश्न उठता है कि गुरु कौन होता है? और किसे अपना गुरु मानें तो विभिन्न परंपराओं और मान्यताओं में इसके भिन्न-भिन्न उत्तर मिल सकते हैं। वास्तव में, गुरु वही होता है जो अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाए, जो भीतर के अंधकार को दूर कर आत्मा को जागृत करे, मिथ्यात्व का नाश करे। इसी कारण भारतीय परंपरा में गुरु को ईश्वर से भी पहले स्थान दिया गया है।

भारतीय संस्कृति में गुरु को स्वीकार करने की एक विधिवत परंपरा रही है। तेरापंथ धर्मसंघ में यह परंपरा 'सम्यक्त्व दीक्षा' के रूप में प्रचलित है। इस दीक्षा में कुछ मौलिक सिद्धांतों और नियमों को औपचारिक रूप से स्वीकार किया जाता है। इसे एक प्राचीन श्लोक के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है–

अरहंतो महदेवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरूणो। जिणप्पण्णत्तं धम्मं, इय समत्तं मए गहियं।।

अर्थात्: अरिहंत– वीतराग– मेरे आराध्य देव हैं। वर्तमान आचार्य– जो सुसाधु हैं– मेरे गुरु हैं और जिनप्रणीत धर्म– केवली भगवान द्वारा प्रतिपादित– मेरा धर्म है। यह सम्यक्त्व मैंने पूर्ण रूप से स्वीकार किया है।

इसका प्रारूप इस प्रकार है–

- मैं भगवान महावीर को अपने आराध्य देव के रूप में स्वीकार करता हूं।
- मैं परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी को अपना गुरु स्वीकार करता हूं।
- मैं जैन श्वेताम्बर तेरापंथ को अपना एक मात्र धर्म स्वीकार करता हूं।

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

बिना लाभ का आरंभ

कंटालिया में भीखणजी स्वामी का संसारपक्षीय मित्र था, नाम था– गुलोजी गादिया। स्वामीजी ने उससे पूछा– 'गुला! तुमने खेती की है?'

'हां, स्वामीनाथ! की है।'

स्वामीजी ने पूछा– 'उपज कितनी हुई और खर्च कितना लगा?'

गुलोजी बोले– 'स्वामीनाथ! दस रुपये लगे हैं। कुछ हल जोतने के भाड़े के, कुछ निदाई के और कुछ बीज के। कुल दस रुपये लगे।'

स्वामीजी ने पूछा– 'वापिस कितने आए?'

तब गुलजी ने कहा– 'स्वामीनाथ! लगभग दस रुपयों का माल वापिस आया– कुछ रुपयों के मूंग, कुछ चारा, कुछ बाजरी, सब दस रुपयों का माल वापिस आया। जितना लगा, उतना आ गया।

तब स्वामीजी बोले– 'गुला! ये दस रुपये कोठे के आले में पड़े रहते तो तुझे इतना पाप नहीं लगता। ऐसा आरंभ क्यों किया?'

साप्ताहिक प्रेरणा

इस सप्ताह कम से कम 3 सामायिक करने का प्रयास करें।

संकल्प

1. मैं यावज्जीवन के लिए देव, गुरु और धर्म के प्रति अपनी श्रद्धा समर्पित करता हूँ।
2. मैं अण्डा, मांस, मछली व शराब का सेवन नहीं करूंगा।
3. मैं आवेशवश आत्महत्या और अन्य किसी मनुष्य की हत्या नहीं करूंगा।
4. मैं नमस्कार महामंत्र का विशेष परिरिथति के सिवाय प्रतिदिन कम से कम 21 बार पाठ करूँगा।

इन चारों संकल्पों के अतिक्रमण का मैं यावज्जीवन के लिए त्याग करता हूं।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का 106वें जन्मोत्सव पर देशभर में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

स्थिरयोगी के पथ को तो स्वयं आलोकित करता है सूरज

अमरनगर। 'शासनश्री' साध्वी सत्यवतीजी के सान्निध्य में प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञजी का 106वां जन्मदिन मनाया गया। अध्यात्म योगी की वर्धापना में साध्वी रोशनीप्रभाजी ने गुरु-शिष्य के अनहद वात्सल्य व जीवन प्रसंगों को साझा किया। वहीं साध्वी शशिप्रज्ञाजी ने कहा कि कई शताब्दियों के बाद ऐसे महापुरुष का जन्म होता है, जिनकी सरलता स्वयं उनका अनुसरण करती है। कोई उन्हें आचार्य सिद्धसेन कहता, कोई विवेकानंद; लेकिन उनके विद्या-गुरु कहते थे—उन्हें 'महाप्रज्ञ' ही रहने दो। साध्वी पुण्यदर्शनाजी ने अदृश्य जगत के महायोगी से जुड़े कुछ प्रश्न-उत्तर के माध्यम से ज्ञान-सम्पदा को समृद्ध करने का प्रयास किया। 'शासनश्री' साध्वी सत्यवतीजी ने अभिवंदना के स्वर में कहा—आचार्य महाप्रज्ञजी संत तो थे ही, साथ ही एक कुशल दार्शनिक एवं विद्वान पंडित के रूप में भी प्रख्यात हुए। ऐसे स्थिरयोगी के पथ को तो सूरज स्वयं आलोकित करता है और चन्द्रमा शीतलता की छाया प्रदान करता है। अर्चना के स्वर में तेरापंथ महिला मंडल ने महापुरुष के जीवन की एक झलक को मंच पर चित्रित किया और गीतिका के माध्यम से अपनी आस्था को उजागर किया। सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला, नवनिर्वाचित तेयुप अध्यक्ष मनसुख संचेती, प्रो. महावीर राज गेलड़ा एवं जगदीश धारीवाल ने भावपूर्ण विचार व्यक्त किए।कार्यक्रम का प्रारंभ संगीता जीरावला एवं चन्द्रा जीरावला के मंगलाचरण से हुआ तथा कौशलपूर्ण संचालन सभा मंत्री महावीर चोपड़ा ने किया।

समर्थता के साथ समर्पण का नाम है महाप्रज्ञ

जयपुर। आचार्य महाप्रज्ञ के 106वें जन्मदिवस के कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुनि तत्त्व रुचि जी 'तरुण' ने कहा—विद्वता के साथ विनम्रता और समर्थता के साथ समर्पण का नाम है आचार्य श्री महाप्रज्ञ। मुनिश्री ने आगे कहा—जीवन में विनम्रता वरदान है और समर्पण स्वर्ग का द्वार खोलता है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की विकास यात्रा में इन दोनों गुणों की अहम भूमिका रही है। उनके आंतरिक व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए मुनिश्री ने कहा कि उनके व्यक्तित्व में एक चुंबकीय आकर्षण था—संपर्क में आने वाला कोई भी व्यक्ति उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था। इस संदर्भ में मुनिश्री ने कई उदाहरण भी प्रस्तुत किए। मुनि संभवकुमार जी ने कहा—नेतृत्व की शैली प्रत्येक व्यक्ति की अपनी होती है। कोई अनुशासक कठोर प्रकृति का होता है, तो कोई कोमल स्वभाव का। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी में दोनों का सुंदर संगम था। वे अतींद्रिय ज्ञान और जागृत प्रज्ञा के धनी थे। कार्यक्रम की शुरुआत तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा 'महाप्रज्ञ जन्मोत्सव आज मनाएं' गीत के मंगलाचरण से हुई। इस अवसर पर तेरापंथ सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजेंद्र बांठिया, तेरापंथ युवक परिषद से अनिल दुगड़, बरकत नगर श्रावक समाज से सम्पत बोथरा, संदीप भंडारी, प्रतीक लोढ़ा, सरोज बैद, निशा भूतोड़िया, कोमल लोढ़ा, गुलाब जी बोथरा, संगीता, सुनीता लोढ़ा, सुरभि, मधु बैद, सुमन कोठारी आदि ने अपने विचार, वक्तव्य और गीत-कविताओं के माध्यम से भावांजलि अर्पित की।

बाह्य एवं आंतरिक व्यक्तित्व था समान रूप से प्रभावशाली

चेंबूर। तेरापंथ धर्म संघ के दशम अधिशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री महाप्रज्ञजी का 106वां जन्मदिवस 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभाजी के सान्निध्य में आयोजित किया गया।

साध्वी कंचनप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा—आचार्य श्री महाप्रज्ञजी विशद आध्यात्मिक शक्ति से संपन्न थे। उनमें विनय, श्रद्धा एवं समर्पण का विलक्षण समन्वय था। उनका बाह्य एवं आंतरिक व्यक्तित्व समान रूप से प्रभावशाली था। आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने आचार्य श्री तुलसी के नेतृत्व में जैन आगमों का कुशल संपादन किया।

'शासनश्री' साध्वी मंजुरेखाजी ने कहा—परम श्रद्धास्पद आचार्य महाप्रज्ञजी की अहिंसा यात्रा ने साम्प्रदायिक सौहार्द का सशक्त संदेश दिया। उसी यात्रा की परिणति थी कि पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम उनके चरणों में पहुंचे और वहीं अपना जन्मदिन भी मनाया। साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी एवं साध्वी चेलनाश्रीजी ने भक्ति से परिपूर्ण भावों के माध्यम से पूज्य गुरुदेव के जीवन की गरिमा को उजागर किया।

कार्यक्रम में स्थानीय विधायक तुकाराम काते विशेष रूप से आमंत्रित थे। उन्होंने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए भावपूर्ण उद्गार प्रकट किए। विशेष आकर्षण के रूप में 106 भाई-बहनों ने सामूहिक गीतिका की प्रस्तुति देकर चेंबूर के सभाभवन को गुंजायमान कर दिया।

इस अवसर पर विधायक तुकाराम काते, मुंबई व्यापारी सेल के अध्यक्ष लक्ष्मण कोठारी, सभा अध्यक्ष रमेश धोका, महिला मंडल अध्यक्षा मनीषा कोठारी सहित घाटकोपर, विक्रोली, सायन कोलीवाड़ा, कुर्ला आदि क्षेत्रों से श्रावक-श्राविका समाज की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

मानवता के लिए अमूल्य धरोहर हैं महाप्रज्ञ के अवदान

राजसमन्द। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 106वां जन्मदिवस साध्वी उज्जवलप्रभा जी के सान्निध्य में अणुव्रत भवन, राजसमंद में संपन्न हुआ। साध्वी उज्जवलप्रभा जी ने सदन को संबोधित करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी एक महान साहित्यकार थे। उनका जीवन अध्यात्म से अनुप्राणित था। 'महाप्रज्ञ वाङ्मय' में अनेक ऐसे ग्रंथ हैं, जिनके स्वाध्याय से चेतना सक्रिय हो सकती है और जीवन-शैली में परिवर्तन आ सकता है। उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी का अवदान—अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान—अध्यात्म जगत एवं मानवता के लिए अमूल्य धरोहर है।

साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी की अंतःप्रज्ञा जाग्रत थी। उन्होंने अपनी जागृत प्रज्ञा से अनेकों में चेतना का संचार किया। कई जनों में श्रुत-चेतना और व्रत-चेतना को जागृत किया। साध्वी समंतप्रभा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी का जीवन श्रद्धा, समर्पण और विनम्रता की बेजोड़ गाथा था। मुख्य वक्ता डॉ. महेंद्र कर्णावट ने आचार्य महाप्रज्ञ जी के जीवन-दर्शन को प्रस्तुत करते हुए मुनि नथमल जी से लेकर आचार्य महाप्रज्ञ जी बनने तक की संपूर्ण यात्रा का वर्णन किया। इस अवसर पर जिनल डूंगरवाल, सभा अध्यक्ष हर्षलाल नवलखा, चतुर कोठारी, अचल धर्मावत, सुधा कोठारी, प्रमोद कावड़िया, दिव्यांश चव्हान, मुमुक्षु छवि जोगड़ (औरंगाबाद) सहित अनेक वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम का कुशल संचालन भिक्षु बोधि स्थल के सह-मंत्री भूपेश धोका ने किया तथा आभार अणुव्रत भवन के अध्यक्ष ललित बडोला ने ज्ञापित किया।

अनुपम था आचार्य महाप्रज्ञ का समर्पण

महरौली, नई दिल्ली। आचार्य महाप्रज्ञ का 106वां जन्मदिवस अत्यंत आह्लादकारी वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर सैकड़ों घरों में 'ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरुवे नमः' का जाप-अनुष्ठान सम्पन्न हुआ। आज ही के दिन अध्यात्म साधना केन्द्र एवं तेरापंथ परिसर के समस्त स्टाफ एकत्रित हुए और प्रेक्षावाहिनी कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। राज गुनेचा एवं विमल गुनेचा के निर्देशन में लगभग 31 भाई-बहनों ने इसमें सहभागिता की।

इस अवसर पर साध्वी कुन्दनरेखा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ का समर्पण अनुपम था, उनका संपूर्ण जीवन उसकी मिसाल रहा। 'रहो बाहर, जीओ भीतर' इस मंत्र ने उन्हें शाश्वत संदेश प्रदान किया, जिसके कारण वे महायोगीराज कहलाए। उन्होंने सेवा, स्वास्थ्य, सहनशीलता, संयम और शांति जैसे जीवन मूल्यों को अपनाने का संदेश दिया और जनचेतना को जाग्रत किया। उन्होंने न केवल संघ को आलोकित किया, अपितु मानव-मन को भी संवारने का अथक प्रयास किया। प्रेक्षावाहिनी का शुभारंभ उनके जन्मदिवस पर सच्ची श्रद्धांजलि है।

साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा कि करुणा के सागर आचार्य महाप्रज्ञ का जन्म जनचेतना के जागरण हेतु हुआ। उन्होंने आचार्य कालूगणी से दीक्षा, गुरुदेव तुलसी से शिक्षा प्राप्त की और अपने पुरुषार्थ से आत्मचेतना को जाग्रत किया। साध्वी कल्याणयशा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी जीवनशैली से विश्व को प्रतिबोधित किया और शांति का संदेश दिया। इस अवसर पर गायक जितेन्द्र कुमार ने आचार्य महाप्रज्ञ की दो कविताओं को मधुर स्वर देकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। राजेश भंडारी ने भी अपनी सुमधुर आवाज में प्रस्तुति दी। संदीप डूंगरवाल ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ केवल एक व्यक्ति नहीं बल्कि विचार हैं, जिनकी मौलिक सोच, अद्वितीय साहित्य सृजन और सौम्य स्वभाव ने सभी को प्रभावित किया। प्रेक्षाध्यान जैसे महान अवदान से उन्होंने तनावमुक्त और आनंदमयी जीवन शैली का महामंत्र दिया। कार्यक्रम की शुरुआत तेरापंथ महिला मंडल साउथ दिल्ली द्वारा प्रस्तुत प्रेक्षागीत से हुई। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रेक्षा प्रशिक्षिक विमल गुनेचा ने किया। इस अवसर पर ध्यान के प्रयोग भी करवाए गए।

गंगाशहर में हुआ नथमल का भाग्योदय

गंगाशहर। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 106वां जन्मदिवस उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में बोथरा भवन, गंगाशहर में श्रद्धा व भक्ति के साथ मनाया गया। मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि बालक नथमल का भाग्योदय गंगाशहर में हुआ था। यहीं उन्हें प्रतिक्रमण का आदेश मिला और यहीं उन्हें 'महाप्रज्ञ' का अलंकरण प्राप्त हुआ। वे हजारों लोगों के जीवन निर्माता, भाग्यविधाता, और आगमों के गहन ज्ञाता थे। उनकी माता बालू जी, जो उनके साथ ही दीक्षित हुई थीं, उनकी अंतिम अवस्था में आचार्य महाप्रज्ञ जी द्वारा रचित गीतिका 'चैत्य पुरुष जाग जाए' आज भी मानसिक व आध्यात्मिक शांति देती है। उन्होंने बताया कि उनके प्रवचन, विचार और साहित्य से जैन-अजैन सभी प्रभावित हुए। प्रेक्षाध्यान, अहिंसा यात्रा जैसे उनके प्रयासों ने उन्हें वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला आध्यात्मिक शिरोमणि सिद्ध किया। उन्होंने राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के साथ 'सुखी परिवार, समृद्ध राष्ट्र' पुस्तक भी लिखी। मुनि विमलविहारीजी ने कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का जन्म 14 जून 1920 को राजस्थान के टमकोर गांव में हुआ। दस वर्ष की उम्र में दीक्षा लेने वाले नथमल, आगे चलकर तेरापंथ धर्म संघ के 10वें आचार्य बने। उनका जीवन आचार्य तुलसी के सान्निध्य में साधना व समर्पण से परिपूर्ण रहा। मुनि श्रेयांस कुमार जी ने आचार्यश्री की करुणा, प्रज्ञा व गुरु भक्ति पर प्रकाश डालते हुए एक भावपूर्ण गीतिका प्रस्तुत की। इस अवसर पर सभा, न्यास, टीपीएफ, शांति प्रतिष्ठान, महिला मंडल, युवक परिषद, कन्या मंडल, अणुव्रत समिति आदि संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भी अपने वक्तव्यों के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
07 जुलाई - 13 जुलाई, 2025

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

महामना आचार्यश्री भिक्षु

तेरापथ गणिराज की, जन्म त्रि सदी आगाज,
निज भावों से अर्चना, करें प्रभु की आज।
भिक्षु को जानें सभी, पहचानें-मानें,
रचना से अर्पण करें, अंतर्मन आवाज।।

भिक्षु चेतना वर्ष पर आचार्य श्री भिक्षु के दर्शन को जन-जन तक पहुंचाने का अनुपम अवसर

- आचार्य श्री भिक्षु की जन्म त्रिशताब्दी के इस ऐतिहासिक अवसर पर आपको आमंत्रण है – अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से तेरापंथ टाइम्स के विशेष अंकों का हिस्सा बनने का।
- आप अपनी मौलिक रचना हमें प्रेषित कर सकते हैं, जो लेख, गीत, कविता या अन्य किसी साहित्यिक विधा में हो सकती है।

रचना हेतु नियम

1. प्रत्येक रचनाकार से केवल एक रचना ही स्वीकार की जाएगी।
2. रचना का आधार आचार्य भिक्षु एवं उनका दर्शन हो।
3. लेख की अधिकतम सीमा लगभग 750 शब्दों तक सीमित हो।
4. गीत/कविता अधिकतम 5 पद्य अथवा 15 पंक्तियों (दोनों में से जो भी कम हो) तक ही सीमित रहें।
5. प्राप्त रचनाओं का प्रकाशन भिक्षु चेतना वर्ष के दौरान कभी भी किया जा सकता है।
6. रचना के प्रकाशन का अंतिम निर्णय तेरापंथ टाइम्स संपादक मंडल का होगा।
5. रचना भेजने की अंतिम दिनांक- 31 अगस्त, 2025

रचना भेजने का माध्यम

ईमेल करें : abtyptt@gmail.com या
वॉट्सएप करें : +91 89059 95002

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के सोलहवें स्थापना दिवस पर विविध आयोजन

हिमायतनगर

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF) का 16वां स्थापना दिवस समारोह तेरापंथ भवन, हिमायतनगर में श्रद्धा और गरिमा के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ TPF टीम द्वारा मंगलाचरण से हुआ। कोषाध्यक्ष अर्हम बेंगाणी ने स्वागत वक्तव्य देते हुए TPF के उद्देश्यों और कार्यों की जानकारी दी। तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुशील संचेती ने संस्थान के प्रति सहयोग और समर्पण की भावना व्यक्त की। राष्ट्रीय सह मंत्री मोहित बैद ने 'SHINE' मॉडल की व्याख्या करते हुए युवाओं को सक्रियता के लिए प्रेरित किया। ऑर्गनाइजेशन एंड डेवलपमेंट चेयरमैन ऋषभ दुगड़ ने TPF की गतिविधियों और उपलब्धियों का विवरण प्रस्तुत किया। साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने अपने उद्बोधन में संस्था के समर्पण भाव की सराहना की और निस्वार्थ सेवा की प्रेरणा दी।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने सामाजिक उत्तरदायित्व की चर्चा की, वहीं साध्वी मेरुप्रभा जी ने एक भावपूर्ण गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम में 16 वर्षों की उपलब्धियों पर आधारित प्रेरणादायक वीडियो दिखाया गया। इसके बाद साउथ ज़ोन अवॉर्ड्स वितरित किए गए, जिसमें हैदराबाद को 'शाइनिंग स्टार' अवॉर्ड प्राप्त हुआ। उत्कृष्ट योगदान के लिए TPF सदस्यों को सम्मानित भी किया गया। राष्ट्रीय टीम और स्थानीय टीम से अनेक सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. मोहित सेठिया व डॉ. तुषार चोपड़ा ने किया और संचालन वर्षा बैद व निखिल कोटेचा ने किया।

दिल्ली

अध्यात्म साधना केंद्र, महरौली में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF) दिल्ली-NCR की गुरुग्राम, फरीदाबाद, नोएडा और गाज़ियाबाद शाखाओं के संयुक्त तत्वावधान में 16वां स्थापना दिवस, प्रेक्षा ध्यान कार्यशाला एवं इंटर-ब्रांच कनेक्ट कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विजय नाहटा ने की। इस अवसर पर TPF गौरव के.सी. जैन, नॉर्थ ज़ोन सचिव राहुल बोथरा, NEC सदस्य प्रसन्न सुराना, नवनीत दुगर, अजय संचेती, संजय चोरड़िया सहित वरिष्ठ पदाधिकारी व सदस्य उपस्थित रहे। प्रेक्षा ध्यान सत्र, संगीतमय प्रस्तुतियाँ और प्रेरणादायक वक्तव्य कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण रहे। आपसी समर्पण और नेटवर्किंग को बढ़ावा देने वाले इस आयोजन में 35 से अधिक सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में सभी ने राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत के विजन 'Involve – You Matter' को आत्मसात करते हुए संगठन को नई ऊँचाइयों पर ले जाने का संकल्प लिया। TPF दिल्ली-NCR परिवार ने सभी प्रतिभागियों का आभार जताया और भविष्य में इसी प्रकार के प्रेरक आयोजनों की कामना की।

नागपुर

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF) का 16वां स्थापना दिवस अणुव्रत भवन, नागपुर में राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत माण्डोत की अध्यक्षता में उत्साहपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ TPF नागपुर अध्यक्ष राहुल कोठारी ने स्वागत भाषण से किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत माण्डोत ने SHINE मॉडल और INVOLVE - You Matter थीम के माध्यम से संगठन की गतिविधियों और प्रत्येक सदस्य की भागीदारी की महत्ता को रेखांकित किया। उन्होंने शिक्षा सहयोग, परामर्श जैसे प्रकल्पों की जानकारी देते हुए समाज के प्रोफेशनल्स से अधिक सहभागिता का आह्वान किया। पश्चिम क्षेत्र अध्यक्ष दिनेश चोपड़ा ने बताया कि TPF प्रतिभाओं को मंच देकर उनके शैक्षणिक और व्यावसायिक विकास में सहायक बन रहा है। उन्होंने आगामी राष्ट्रीय सम्मेलन में भागीदारी के लिए प्रेरित किया। पश्चिम क्षेत्र उपाध्यक्ष सीए प्रियांक जैन ने 'ReKonnect' योजना की जानकारी साझा करते हुए संगठन को और सशक्त बनाने का संदेश दिया। कार्यक्रम में राइजिंग स्टार अवार्ड से सक्षम दुगड़ और अरिहंत पटावरी को सम्मानित किया गया। संचालन सचिव सीए विवेक पारख ने प्रभावशाली ढंग से किया तथा उपाध्यक्ष प्रथम एडवोकेट शिवाली पुगलिया ने आभार ज्ञापन प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर सभा अध्यक्ष विजय रांका, पूर्व अध्यक्ष सुनील छाजेड़, मनोज बेताला, विकास और मुकेश बुच्छा, महावीर बोथरा, तेयुप सचिव अंकुर बोरड़, TPF कोषाध्यक्ष सीए सौरभ दफ्तरी सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

इंदौर

मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, इंदौर द्वारा TPF के 16वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में 'तनावः कारण, चुनौतियाँ एवं निवारण' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार महामंत्र व मंगलाचरण से हुआ। बालिका अवनी जैन ने आचार्य महाप्रज्ञ जी को भावभीनी गीतिका अर्पित की। TPF इंदौर अध्यक्ष चंद्र कुमार भटेरा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। सभा अध्यक्ष निर्मल नाहटा ने समाज की ओर से अभिवादन किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत ने SHINE मॉडल, शिक्षा सहयोग योजना, और तनाव प्रबंधन पर केंद्रित TPF की गतिविधियों की जानकारी दी। मुनि अर्हत कुमार जी ने तनाव के कारणों व उनके आध्यात्मिक समाधान पर उद्बोधन प्रदान किया। मुनि भरत कुमार जी ने TPF की भूमिका व तनाव से निपटने पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम में हितेंद्र मेहता, विमल घोड़ावत एवं मनीष बोरड का सम्मान किया गया। CA विकास बेद व CA सोहित कोटड़िया को 'मोस्ट एक्टिव मेंबर' के रूप में सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन निवृत्तमान अध्यक्ष सोहित कोटड़िया ने किया और मंत्री द्वारा आभार ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। सज्जन भटेरा परिवार का आयोजन में सहयोग हेतु विशेष धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष

आगामी आषाढ शुक्ला त्रयोदशी तदनुसार 8 जुलाई 2025 को जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के आद्यअनुशास्ता परम पूज्य आचार्यश्री भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष का शुभारंभ हो रहा है। यह वर्ष जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के लिए एक महत्त्वपूर्ण वर्ष है। इस वर्ष के समायोजन की रूपरेखा यहां प्रस्तुत है-

नाम : **भिक्षु चेतना वर्ष**
शुभारंभ : वि.सं. 2082 आषाढ शुक्ला त्रयोदशी, 8 जुलाई 2025
संपन्नता : वि.सं. 2083 आषाढ शुक्ला त्रयोदशी
पावन निर्देशन : **युगप्रधान परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण**

चरण, महाचरण एवं अन्य आयोजन

प्रथम चरण (शुभारंभ) : वि.सं. 2082 आ. शु. 13-15, 8-10 जुलाई 2025, प्रेक्षा विश्व भारती, अहमदाबाद
द्वितीय चरण : वि.सं. 2082 भाद्रपद शुक्ला 11-13, 3-5 सितम्बर 2025, प्रेक्षा विश्व भारती, अहमदाबाद
महाचरण (कंटालिया प्रवास) : वि.सं. 2082 पौष कृष्णा 11 से पौष शुक्ला 7, 15-27 दिसम्बर 2025, कंटालिया
तृतीय चरण– वि.सं. 2082 माघ शुक्ला 11-13/14, 29-31 जनवरी 2026, छोटी खाटू
चतुर्थ चरण (संपन्नता)– वि.सं. 2083 आषाढ शुक्ला 11-13, लाडनूं

1. यथासंभवतया सामान्यतया गुरुकुलवास व बाहर प्रत्येक शुक्ला 13 के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के प्रवचन निर्धारित विषयों पर हों। निर्धारित तिथियां एवं विषय इस प्रकार हैं-

8 जुलाई 2025	वि.सं. 2082	आषाढ शुक्ला 13	आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष शुभारंभ समारोह
9 जुलाई 2025	वि.सं. 2082	आषाढ शुक्ला 14	आचार्य भिक्षु द्वारा रचित संविधान
10 जुलाई 2025	वि.सं. 2082	आषाढ पूर्णिमा	तेरापंथ का उद्भव
7 अगस्त 2025	वि.सं. 2082	श्रावण शुक्ला 13	आचार्य भिक्षु की अनुशासन शैली
3 सितम्बर 2025	वि.सं. 2082	भाद्रपद शुक्ला 11	तेरापंथ तब और अब
4 सितम्बर 2025	वि.सं. 2082	भाद्रपद शुक्ला 12	तब तक तेरापंथ चलेगा
5 सितम्बर 2025	वि.सं. 2082	भाद्रपद शुक्ला 13	आचार्य भिक्षु के जीवनकाल के अंतिम भाद्रपद महीने की शिक्षाएं
5 अक्टूबर 2025	वि.सं. 2082	आश्विन शुक्ला 13	दान : एक विश्लेषण
3 नवम्बर 2025	वि.सं. 2082	कार्तिक शुक्ला 13	दया : एक विश्लेषण
3 दिसम्बर 2025	वि.सं. 2082	मार्गशीर्ष शुक्ला 13	मिथ्यात्वी की करणी : एक विश्लेषण
1 जनवरी 2026	वि.सं. 2082	पौष शुक्ला 13	आचार्य भिक्षु की समझाने की शैली (सात दृष्टान्त)
29 जनवरी 2026	वि.सं. 2082	माघ शुक्ला 11	चोर का दृष्टान्त : अध्यात्म का वृत्तान्त
30 जनवरी 2026	वि.सं. 2082	माघ शुक्ला 12	कषायी भी बने अकषायी
31 जनवरी 2026	वि.सं. 2082	माघ शुक्ला 13/14	कुशील से सुशील की ओर
1 मार्च 2026	वि.सं. 2082	फाल्गुन शुक्ला 13	साध्य साधन शुद्धि
	वि.सं. 2083	चैत्र शुक्ला 13	भगवान महावीर और आचार्य भिक्षु
	वि.सं. 2083	वैशाख शुक्ला 13	पुण्य बंध: एक विश्लेषण
	वि.सं. 2083	प्र. ज्येष्ठ शुक्ला 13	आश्रव का जीवत्व : एक विश्लेषण
	वि.सं. 2083	द्वि. ज्येष्ठ शुक्ला 13	अल्प पाप, बहु निर्जरा
	वि.सं. 2083	आषाढ शुक्ला 11	आचार्य भिक्षु का ज्ञान वैभव
	वि.सं. 2083	आषाढ शुक्ला 12	आचार्य भिक्षु का साहित्य संसार
	वि.सं. 2083	आषाढ शुक्ला 13	आचार्य भिक्षु त्रिशताब्दी वर्ष समापन समारोह

महाचरण के दौरान यथासंभवतया प्रत्येक दिन आचार्य भिक्षु से संबंधित विषयों पर प्रवचन आदि हो सकेंगे।

2. यथासंभवतया प्रत्येक शुक्ला 13 को रात्रि में आंशिक धम्म जागरणा का आयोजन किया जा सकता है। सिरियारी में समय की अवधि यथानुकूलता रह सकती है।

जप और तप

1. व्यक्तिगत रूप में 'ॐ भिक्षु-जय भिक्षु' का सवा लाख जप यथेष्ट किया जा सकता है।
2. प्रत्येक शुक्ला 13 को उपवास, एकासन, विगयवर्जन आदि यथेष्ट तप किया जा सकता।

स्वाध्याय

1. इस वर्ष तेरापंथ धर्मसंघ में विशेषतया 'भिक्खु जस रसायन' तथा 'भिक्षु विचार दर्शन' का यथासंभव स्वाध्याय किया जाए।
2. इस वर्ष में भिक्खू दृष्टान्त, अनुकम्पा री चौपाई, नवपदार्थ, व्रताव्रत री चौपाई, विनीत-अविनीत री चौपाई, इंद्रियवादी री चौपाई, मिथ्यात्वी री करणी- इन सात ग्रंथों का वाचन भी किया जा सकता है।
3. अग्रांकित पुस्तकों का भी यथासंभवतया स्वाध्याय किया जा सकता है-
   - भिक्षु वाणी - आचार्य महाश्रमण
   - आचार्य भिक्षु की अनुशासन शैली - साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा
   - आचार्य भिक्षु - शासन गौरव मुनि बुद्धमल
   - ऐसे थे भिक्षु - मुनि मोहनलाल 'आमेट'
   - आचार्य भिक्षु के विचारों की प्रासंगिकता - मुनि महेन्द्रकुमार
4. श्रावक समाज में तेरापंथ प्रबोध कंठस्थ करने का भी यथासंभव क्रम चले।
5. तेरापंथ प्रबोध पर आधारित व्याख्यान प्रवचन भी किया जा सकता है।

दायित्व

1. इस वर्ष से संबंधित अपेक्षित योजना निर्माण, क्रियान्वयन, व्यवस्थापन, संपर्क, प्रचार-प्रसार आदि का दायित्व जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा का रहेगा।
2. गुरुकुलवास में चारों चरणों और महाचरण के आयोजन का दायित्व आयोजन क्षेत्र की प्रवास व्यवस्था समिति का रहेगा। अपेक्षानुसार तेरापंथी महासभा से परामर्श व पथदर्शन प्राप्त किया जा सकता है और महासभा भी यथापेक्षा उन्हें निर्देशन-इंगित दे सकती है।
3. गुरुकुलवास में अपेक्षानुसार कोई संगोष्ठी आदि आयोजित करनी हो तो प्रवास व्यवस्था समिति द्वारा उसका आयोजन किया जा सकता है।
4. गुरुकुलवास से बाहर में आयोज्य कार्यक्रमों का दायित्व स्थानीय तेरापंथी सभा का रहेगा।

(साभार : विज्ञप्ति - वर्ष 31, अंक 4)

दीक्षार्थी अभिनंदन समारोह का आयोजन

हनुमंतनगर, बैंगलोर।

हनुमंतनगर स्थित मूलचंद नाहर के निवास स्थान पर साध्वी पुण्ययशा जी के सान्निध्य में मुमुक्षु मनोज संकलेचा के अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण के साथ हुआ।

साध्वी पुण्ययशा जी ने अपने उद्बोधन में कहा—'ज्ञान का सार विनम्रता है, ध्यान का सार निर्विचारता, जीवन का सार भलाई और साधना का सार समता है। जो व्यक्ति साधना के पथ पर अग्रसर होता है, उसके जीवन में ये चारों तत्व अवश्य विद्यमान होते हैं।' साध्वी श्री ने कहा कि जब वैराग्य पुष्ट होता है, तब व्यक्ति संयम पथ पर अग्रसर होने का दृढ़ संकल्प कर लेता है।

दीक्षार्थी को प्रेरित करते हुए उन्होंने कहा— 'जिस सिंह वृत्ति से संयम पथ का वरण किया है, उसी सिंह वृत्ति से आजीवन इस पथ पर आगे बढ़ना चाहिए। गुरु-निष्ठा एवं संघ-निष्ठा निरंतर वर्धमान हो, वैराग्य भाव सुदृढ़ होता रहे और गुरु इंगित की आराधना करते हुए लक्षित मंजिल को प्राप्त किया जाए।' साध्वी वर्धमानयशा जी ने भी अपने भावपूर्ण विचार प्रकट किए। दीक्षार्थी मनोज संकलेचा ने भावुकता से कहा—'गुरु के चरणों में रहना जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य है। मैं उस पावन दिवस की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जब मुझे पूज्य प्रवर के चरणों में रहने का सौभाग्य प्राप्त होगा। इस मार्ग पर अग्रसर होने में मेरे काका महाराज मुनि दिनेश कुमार जी का विशेष योगदान रहा है। साथ ही, परम पूज्य गुरुदेव का सूरत चातुर्मास मेरे वैराग्य की पुष्टि का कारण बना।'

इस अवसर पर युवा गौरव मूलचंद नाहर, सभा अध्यक्ष गौतम दक, मंजू दक, प्रकाश बाबेल, गौतम मुथा, अशोक नागौरी, संगीता तातेड़ एवं तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष कमलेश झाबक सहित कई गणमान्यजनों ने दीक्षार्थी मनोज संकलेचा को शुभकामनाएं दीं और उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना की। संचालन ललित आच्छा ने कुशलतापूर्वक किया एवं परिषद के पूर्व अध्यक्ष गौतम खाब्या ने अंत में सभी का आभार व्यक्त किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 जुलाई - 13 जुलाई, 2025

राग से वीतरागता की ओर अग्रसर होने का मार्ग है दीक्षा

गंगाशहर।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी के सान्निध्य में छोटी खाटू निवासी भुवनेश्वर प्रवासी विवेक बेताला व विज्ञादेवी बेताला के पुत्र मुमुक्षु मोहक बेताला के अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि वैराग्य का उदय उच्च क्षयोपशमिक कर्मों के क्षय से ही संभव होता है। दीक्षा, राग से वीतरागता की ओर अग्रसर होने का मार्ग है। मोहक अत्यंत विनीत और विचारशील है। भौतिकता के इस युग में छोटी आयु में जैन दीक्षा लेना उसकी संकल्पशक्ति और आत्मबल का परिचायक है।

मुनिश्री ने कहा कि आज पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से समाज में अनेक विकृतियां प्रवेश कर रही हैं। जीवन में संस्कारों का ह्रास हो रहा है। जन्मदिन जैसे उत्सवों में केक काटने की परंपरा हमारी संस्कृति के विरुद्ध है। विवाह समारोहों में पूल पार्टियाँ, फूलों की होली, प्री-वेडिंग शूट जैसी अनावश्यक बुराइयाँ समाज में बढ़ रही हैं, जो आत्मविकास की राह में बाधक बनती हैं।

उन्होंने साधना को जीवन का केंद्र बनाने पर बल दिया। मुनिश्री ने कहा कि हमारी प्रत्येक क्रिया—प्रातःकाल जागरण से लेकर रात्रि विश्राम तक—साधना के भाव से युक्त होनी चाहिए। हर कार्य में जागरूकता, पाप प्रवृत्ति से बचाव, बोली में विवेक, संयमित भाषा, और भोजन में उनोदरी की भावना जरूरी है। जहां विवेक है, वहीं धर्म है। दूसरों की कमियों को देखने से अशांति और अपनी कमियों को देखने से शांति मिलती है। मुनिश्री ने समिति गुप्तियों की जागरूकता अपनाने और आत्म उत्थान की राह पर अग्रसर होने का संदेश दिया।

इस अवसर पर मुनि श्रेयांसकुमारजी ने भावपूर्ण गीतिका प्रस्तुत की। मुनि मुकेशकुमारजी ने साध्वी रोहितप्रभाजी द्वारा मुमुक्षु मोहक के लिए भेजे गए विचारों का वाचन किया। मुनि विमलविहारीजी ने भी अपने विचार रखे।

तेरापंथी सभा गंगाशहर के मंत्री जतनलाल संचेती ने मुमुक्षु मोहक को भावी मुनि जीवन के लिए मंगलकामनाएं दीं। मोहक के पिता विवेक बेताला ने बताया कि आचार्यश्री महाश्रमणजी के भुवनेश्वर में प्रवेश जुलूस के प्रथम दर्शन मात्र से ही मोहक के अंतर्मन में वैराग्य के बीज अंकुरित हो गए थे।

तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष नवरतन बोथरा, हनुमान सेठिया एवं तेयुप मंत्री मांगीलाल बोथरा ने मुमुक्षु मोहक का साहित्य एवं पताका से सम्मान कर अभिनंदन किया।

प्रेक्षा प्रवाह कार्यशाला का आयोजन

जसोल। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में, तेरापंथ महिला मंडल जसोल द्वारा साध्वी सम्पूर्णयशा जी एवं साध्वी मेघप्रभा जी के सान्निध्य में "प्रेक्षा प्रवाह" कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वी सम्पूर्णयशा जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। अध्यक्ष कंचनदेवी ढेलडिया ने सभी का स्वागत करते हुए कार्यशाला के उद्देश्य एवं विषय की जानकारी दी। साध्वी सम्पूर्णयशा जी ने प्रेरणादायी कहानी के माध्यम से समझाया कि जैसे एक शिल्पकार सामान्य पत्थर को सुंदर मूर्ति में ढाल सकता है, वैसे ही एक सामाजिक या आध्यात्मिक गुरु किसी साधारण व्यक्ति को 'जीरो से हीरो' बना सकते हैं। उन्होंने 'ज्योति केंद्र प्रेक्षा' का प्रयोग भी करवाया और प्रेक्षा ध्यान से होने वाले लाभ बताते हुए कहा कि इससे एकाग्रता बढ़ती है तथा मानसिक एवं भावनात्मक विकास होता है। साध्वी मेघप्रभा जी ने एक लय में अर्हम मंत्र का जप करवाया और समझाया कि जब हम लयबद्ध होकर जाप करते हैं, तो एक विशेष आनंद की अनुभूति होती है। इससे मन शांत होता है, नकारात्मक विचारों में कमी आती है, चित्त में प्रसन्नता उत्पन्न होती है और सकारात्मक सोच विकसित होती है। कार्यशाला का संचालन सरला नाहटा ने किया और आभार ज्ञापन नीतू सालेचा द्वारा किया गया।

वर्धमान होने के लिए वर्तमान में रहना जरूरी

जयपुर। मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण' का बरकत नगर क्षेत्र में आगमन हुआ। यहाँ स्थित लोढ़ा निवास पर 'सुख-शांति से कैसे जीएं' विषय पर प्रवचन करते हुए मुनिश्री ने कहा—आज टेक्नोलॉजी ने मन को बहुत चलायमान कर दिया है। कार्य की सफलता के लिए मन की एकाग्रता आवश्यक है। मुनिश्री ने बताया कि 'भाव क्रिया' प्रेक्षाध्यान की उपसम्पदा का एक महत्वपूर्ण सूत्र है। भूत और भविष्य से मुक्त होकर केवल वर्तमान में जीने की प्रक्रिया को ही भाव क्रिया कहा जाता है। मुनिश्री ने कहा—जीवन में वर्तमानता से ही वर्धमानता आती है। अतः वर्धमान होने के लिए वर्तमान में रहना आवश्यक है। मुनि संभवकुमार जी ने कहा—जो व्यक्ति भूत और भविष्य में जीता है, वह वर्तमान का आनंद नहीं ले पाता। वर्तमान में रहे बिना कार्य को सही ढंग से सम्पन्न कर पाना कठिन हो जाता है। इस अवसर पर सुमन कोठारी एवं सुनील कुमार लोढ़ा ने अपने विचारों से, तथा सुनीता एवं संगीता लोढ़ा ने गीत गाकर मुनिश्री का स्वागत किया।

जैन विश्व भारती द्वारा प्रदत्त विभिन्न पुरस्कारों हेतु
आवेदन आमंत्रण

पूज्यप्रवरों के चिंतन का एक प्रमुख सृजन है समाज की कामधेनु "जैन विश्व भारती"। जैन विश्व भारती शिक्षा, शोध, साधना, सेवा, संस्कृति आदि क्षेत्रों में तो सक्रिय भूमिका निभा ही रही है साथ ही साथ सम्मान एवं प्रोत्साहन के क्षेत्र में भी गतिशील है। इस संदर्भ में जैन विश्व भारती द्वारा 09 पुरस्कार विभिन्न ट्रस्टों एवं महानुभावों के सहयोग से संचालित हैं। ये पुरस्कार प्रतिवर्ष निर्धारित अर्हताओं के आधार पर क्षेत्र विशेष में विशिष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों एवं संस्थाओं को प्रदान किये जाते हैं। पुरस्कारों से संबंधित विवरण अग्रलिखित है -

(1) आचार्य तुलसी अनेकांत सम्मान :
अर्हता :
1. सापेक्षता समन्वय, सहप्रतिपक्ष, सहिष्णुता एवं सहअस्तित्व के प्रचार-प्रसार एवं क्रियान्वयन में योगदान।
2. जैन दर्शन के महत्वपूर्ण सिद्धान्त 'अनेकान्त' के प्रचार-प्रसार एवं क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान।

(2) आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा सम्मान:
अर्हता :
1. अहिंसा का व्यापक प्रचार-प्रसार एवं आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रणीत अभिनव शांति तकनीक 'अहिंसा प्रशिक्षण' के विकास और संवर्धन में विशेष योगदान ।
2. अहिंसा प्रशिक्षण के क्षेत्र में नवसृजन अथवा अन्य उल्लेखनीय कार्य का संपादन।
3. अहिंसा प्रशिक्षण के विविध आयामों हृदय परिवर्तन, दृष्टिकोण परिवर्तन, जीवन शैली परिवर्तन, व्यवस्था परिवर्तन एवं आजीविका प्रशिक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य।

(3) महादेवलाल सरावगी जैन आगम मनीषा पुरस्कार :
अर्हता :
1. जैन आगमों के विकास, विस्तार एवं संवर्धन में विशेष योगदान।
2. जैन आगम एवं जैन विद्या के क्षेत्र में शोधपूर्ण एवं विशिष्ट कार्य के द्वारा जैन आगमों के संवर्धन में योगदान।

(4) गंगादेबी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार :
अर्हता :
1. केवल महिलाओं के लिए।
2. जैन विद्या के विविध क्षेत्रों में उत्कृष्ट शोध कार्य कर जैन विद्या के विकास में महत्वपूर्ण योगदान।

(5) आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार :
अर्हता :
1. जैनागम एवं प्राकृत भाषा तथा साहित्य के विकास एवं संवर्धन में विशेष योगदान।
2. प्राकृत एवं पाली जैसी प्राचीन भाषाओं के विकास एवं पाण्डुलिपियों के संरक्षण, संपादन एवं प्रकाशन की दिशा में उल्लेखनीय कार्य।
3. नैतिक मूल्यों व श्रमण संस्कृति में आस्था, तेरापंथ धर्मसंघ के सिद्धान्तों, आदर्शों एवं आचार्य के प्रति निष्ठा।

(6) आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार :
अर्हता :
1. आचार्य महाप्रज्ञ के चिन्तन और विचारों को मूर्त रूप प्रदान करते हुए उन्हें साहित्य के माध्यम से प्रसारित करने में विशेष योगदान।
2. जैन विद्या व आचार्य महाप्रज्ञ के विशाल साहित्य का गहन अनुशीलन कर सत्साहित्य सृजन में श्रीवृद्धि का कार्य।
3. नैतिक मूल्यों व श्रमण संस्कृति में आस्था, तेरापंथ धर्मसंघ के सिद्धान्तों, आदर्शों एवं आचार्य के प्रति निष्ठा।

(7) प्रज्ञा पुरस्कार :
अर्हता : शिक्षा, चिकित्सा, पर्यावरण, संस्कृति, पत्रकारिता, कला एवं शिल्प आदि क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान अथवा उल्लेखनीय कार्य।

(8) संघ सेवा पुरस्कार :
अर्हता :
1. संघ एवं संघपति के प्रति निष्ठा, आस्था एवं सेवा भावना को जागृत, प्रोत्साहित एवं वर्धापित करने में विशेष योगदान।
2. धर्मसंघ के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण सेवाएँ।
3. नैतिक मूल्यों व श्रमण संस्कृति में आस्था, तेरापंथ धर्मसंघ के सिद्धान्तों, आदर्शों एवं आचार्य के प्रति निष्ठा।

(9) जय तुलसी विद्या पुरस्कार :
अर्हता : ऐसी शिक्षण संस्था जिसने जीवन विज्ञान एवं मूल्यपरक शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों एवं गतिविधियों को संपादित किया हो।

नोट - उपरोक्त में से किसी भी पुरस्कार के लिए निर्धारित अर्हताओं के अनुसार योग्य पाये जाने पर कोई भी व्यक्ति या संस्था अपने स्वयं या दूसरे व्यक्ति या संस्था के नाम के लिए प्रविष्टियां प्रस्तावित कर सकते हैं। प्रविष्टि के समय विशेष तौर पर इस बात को ध्यान में रखा जाये कि संबंधित व्यक्ति उस पुरस्कार विशेष से प्राप्त क्षेत्र में विशेष योग्यता प्राप्त हो। प्रविष्टि के रूप में संबंधित व्यक्ति या संस्था का बायोडाटा, फोटो एवं विशेष विवरण निम्नलिखित पते पर प्रेषित किया जा सकता है-

आवेदन भेजने हेतु पता : जैन विश्व भारती
पोस्ट लाडनूं 341306, जिला नागौर (राजस्थान)
संपर्क सूत्र: (01581) 226080, 224671
ई-मेल: jainvishvabharati@yahoo.com,
ladnun@jvbharati.org

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002 पर व्हाट्सअप** अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

राष्ट्र संत को समर्पित भव्य भजन संध्या का आयोजन

हैदराबाद।

तेरापंथ भवन, हिमायतनगर में आचार्य श्री तुलसी के 29वें महाप्रयाण दिवस के अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद हैदराबाद द्वारा 'महाप्राण गुरुदेव : सुरमय वंदन' शीर्षक भजन संध्या का आयोजन साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी मेरुप्रभा जी के सुमधुर गीत से हुई।

अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने स्वागत भाषण में आचार्य तुलसी के अवदानों को स्मरण करते हुए भिक्षु प्रज्ञा मंडली की 25 वर्ष की यात्रा को गौरवशाली बताया। उन्होंने कहा कि यह मंडली हैदराबाद ही नहीं, पूरे भारत में अपनी पहचान बना चुकी है, और कई कलाकार राष्ट्रीय मंच पर प्रतिनिधित्व कर चुके हैं।

कार्यक्रम में भिक्षु प्रज्ञा मंडली एवं नगर के गायक कलाकारों—खुशी कठोतिया, रौनक नाहटा, मोनिका भंसाली, शुभराज गधैया, निष्ठा नाहटा, संतोष मंडल व महिला मंडल की बहनों ने भावपूर्ण प्रस्तुतियाँ दीं। मंडली के सदस्यों—राजकुमार सांखला, पवन सेठिया, नवनीत छाजेड़, अभिषेक नाहटा, नवीन लुणिया, शुभम बैद आदि ने भी भजनों के माध्यम से गुरुदेव को श्रद्धांजलि अर्पित की।

साध्वीश्री ने हैदराबाद के कलाकारों को राष्ट्रीय स्तर का बताते हुए उनकी सराहना की। रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में मंडली के संस्थापक दिलीप डागा, संयोजक राजकुमार सांखला, प्रमोद दुगड़, शुभराज गधैया, नवनीत छाजेड़, राहुल गोलछा, नवीन लुणिया, शुभम बैद आदि को मोमेंटो व दुपट्टा प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में महासभा कार्यकारिणी सदस्य अशोक नाहटा, तेयुप संगठन मंत्री जिनेन्द्र बैद, महिला मंडल अध्यक्षा कविता आच्छा सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। अंत में मंत्री अनिल दुगड़ ने साध्वीश्री के सान्निध्य हेतु कृतज्ञता व्यक्त करते हुए सभी का आभार प्रकट किया।

पंच दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर का समापन

बालोतरा।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में सिवांची मालाणी तेरापंथ क्षेत्रीय संस्थान द्वारा आयोजित पांच दिवसीय जोधपुर संभागीय बालिका संस्कार निर्माण शिविर का समापन सिवांची मालाणी भवन में हुआ।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि संस्कार निर्माण शिविर जीवन की प्रयोगशाला का महत्वपूर्ण प्रयोग बनना चाहिए। संस्कार जीवन की अमूल्य धरोहर हैं। ये व्यक्तित्व को संवारने, कर्तृत्व को निखारने और अस्तित्व को ठोस आधार देने वाले तत्व हैं। आप सभी कन्याएं संस्कारों के संरक्षण और संवर्धन के लिए हर पल सजग रहें। आज शिविर का समापन हो रहा है, लेकिन जीवन विकास की यात्रा अब प्रारंभ हो रही है। अब आप संस्कारों के उच्च शिखर की ओर आरोहण करें। आपके चेहरे पर संस्कारों की आभा झलके, और जीवन गुलशन की भांति संस्कारों के सुमनों से सुवासित हो।

साध्वीश्री ने आगे कहा कि हर कन्या को अपने जैनत्व के संस्कारों की रक्षा करनी है। हमें संस्कृति और संस्कारों के पहरेदार बनना है। आज अपसंस्कृति की लहर जीवनशैली को प्रभावित कर रही है। शराब और हुक्का जैसी बुराइयां

लगभग 200 कन्याओं एवं सैंकड़ों भाई-बहनों ने किया शराब व हुक्के का त्याग

आज की किशोर और युवा पीढ़ी की शान, पहचान और शौक बनती जा रही हैं। लेकिन आपको ऐसी पहचान नहीं बनानी है। मैं चाहती हूं कि इस शिविर में उपस्थित हर कन्या शराब और हुक्के का पूर्ण रूप से त्याग करे, जिससे उनका जीवन संवर सके। आप सभी के लिए रोल मॉडल बनना हमारी अपेक्षा है। यह शिविर तभी आपके जीवन का यादगार क्षण बनेगा जब आप इससे प्रेरित होकर जीवन में नई दिशा में कदम बढ़ाएंगे।

साध्वीश्री की प्रेरणा से प्रेरित होकर लगभग 200 कन्याओं सहित सैकड़ों भाई-बहनों ने शराब और हुक्के के सेवन का त्याग कर शिविर को सार्थक और सफल बना दिया।

साध्वीश्री ने सिवांची मालाणी क्षेत्रीय तेरापंथ संस्थान के अध्यक्ष शांतिलाल डागा और उनकी टीम, शिविर संयोजक डूंगरचंद सालेचा और उनकी सहयोगी टीम की लगन, उत्साह एवं सुचारू व्यवस्था की सराहना की, जिसने शिविर की सफलता में चार चाँद लगा दिए। प्रशिक्षक सीए राकेश खटेड और याशिका खटेड के श्रम की भी विशेष रूप से प्रशंसा की गई। राजेश्वरी तातेड़, प्रज्ञा सालेचा और ममता गोलेच्छा का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। आसपास की तेरापंथ सभाओं, तेयुप, महिला मंडलों एवं ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने भी समय देकर श्रमदान किया। सभी के प्रति साध्वीश्री ने अहोभावपूर्वक साधुवाद ज्ञापित किया।

डॉ. साध्वी सुधाप्रभा और संस्थान मंत्री भंवरलाल चौपड़ा ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। कार्यक्रम में तेरापंथ महासभा के उपाध्यक्ष निर्मल गोखरू, संस्थान अध्यक्ष शांतिलाल डागा, प्रशिक्षक सीए राकेश खटेड, केंद्रीय संयोजक धनराज ओस्तवाल, शिविर संयोजक डूंगरचंद सालेचा, मंत्री भंवरलाल चौपड़ा, आईएएस अधिकारी टी.सी. बोहरा सहित कई प्रबुद्धजनों ने सुंदर भावपूर्ण अभिव्यक्तियाँ प्रस्तुत कीं।

पांच दिनों तक साध्वीवृंद एवं प्रशिक्षकों द्वारा कन्याओं को व्यवस्थित और सघन प्रशिक्षण प्रदान किया गया। शिविर में कन्याओं ने पच्चीस बोल पर सुंदर रील बनाई एवं ड्राइंग प्रतियोगिता में भाग लिया, जिसमें सुंदर चित्रों का निर्माण किया गया। साध्वीश्री द्वारा रचित गीत पर सभी कन्याओं द्वारा प्रस्तुत मनमोहक, रोचक और भव्य दृश्य-प्रस्तुति ने सभी को भावविभोर कर दिया। मंगल संगान फलसूंड, सवाऊ पदमसिंह और शेरगढ़ की बालिकाओं द्वारा किया गया।

दीक्षार्थी मंगलभावना कार्यक्रम

डीडवाना।

साध्वी गुप्तिप्रभा जी के सान्निध्य में मुमुक्षु मंगलभावना कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुमुक्षु को प्रेरणा देते हुए साध्वीश्री ने कहा – आप प्रियधर्मा और दृढ़धर्मा बने रहें। वासनाओं से निर्लिप्त, स्वार्थ से अप्रतिहत, वैमनस्य और शत्रुभाव से अदग्ध रहते हुए आगे बढ़ें और नया इतिहास गढ़ें।

अभिव्यक्ति देते हुए अपने संसारपक्षीय भांजे मुमुक्षु मोहक के लिए साध्वी मौलिकयशा जी ने कहा – आज का यह अभिनंदन त्याग का है। जिस सिंहवृत्ति से इस संयम जीवन को अंगीकार किया है, उसी सिंहवृत्ति से उसका पालन करना। उन्होंने आध्यात्मिक जीवन में 'मोहक' नाम की व्याख्या की।

दोनों साध्वियों ने सुमधुर गीत की सामूहिक प्रस्तुति दी। साध्वी भावितयशा जी ने कहा – 'हमने आत्मोदय हेतु साधुत्व को ग्रहण किया है, नाम, यश, प्रतिष्ठा की भूख न जगे। अप्रमत्तता की साधना में निरंतर उर्ध्वारोहण होता रहे।'

तेरापंथी सभा अध्यक्ष सुरेश चौपड़ा, महिला मंडल अध्यक्ष विजयलक्ष्मी सेठिया, प्रियांशी घोडावत, सम्राट घोडावत आदि ने गीत और भाषण के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति दी। कुलदीप, खुशी, मनन एवं प्रिंस मनोत द्वारा प्रस्तुति दी गई।

मयंक मणोत एवं प्रज्ञा जैन ने सुमधुर संगीत की स्वरलहरियों द्वारा मंगलाचरण किया।

मुमुक्षु मोहक ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी तथा झलक बेताला ने अपने भाई से जुड़ी स्मृतियाँ साझा करते हुए भावपूर्ण मंगलकामनाएँ दीं। सभा और महिला मंडल ने मुमुक्षु भाई का अभिनंदन कर हर्ष और आनंद का अनुभव किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन हर्षिता संचेती ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 जुलाई - 13 जुलाई, 2025

सरगम प्रतियोगिता में हुई सुरमयी प्रस्तुतियाँ

वाशी, नवी मुंबई।

सरगम क्वार्टर फाइनल-3 का का भव्य आयोजन वाशी, नवी मुंबई में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद वाशी-नवी मुंबई के आयोजन में यह राष्ट्र स्तरीय संगीत प्रतियोगिता भिक्षु महाश्रमण फाउंडेशन, वाशी में आयोजित की गई।

कार्यक्रम का उद्घाटन अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा द्वारा किया गया। शुभारंभ अर्जुन सोनी द्वारा नमस्कार महामंत्र के मंत्रोच्चार से हुआ। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन प्रसिद्ध एंकर राजुल सुराणा ने प्रभावशाली अंदाज में किया। स्वागत भाषण तेरापंथ युवक परिषद वाशी के अध्यक्ष अरविंद खाटेड ने प्रस्तुत किया।

देश के विभिन्न राज्यों से आई 12 टीमों ने भाग लेकर दो राउंड में अपनी सुरमयी प्रस्तुतियाँ दीं—प्रथम राउंड में तीर्थंकर स्तुति और द्वितीय राउंड में गणाधिपति आचार्य तुलसी पर आधारित प्रस्तुतियाँ दी गईं। इन दोनों राउंड्स में उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर 6 टीमों को सरगम सेमीफाइनल के लिए चयनित किया गया। चयनित टीमों में तरंगिणी (दिल्ली), अंतरनाद (भांडुप), समर्पण (चेन्नई), ताल तरंग (मुंबई), स्वरांगिणी (डोंबिवली), तथा अमृतध्वनी (डोंबिवली) शामिल थीं। प्रतियोगिता का मूल्यांकन मनीषा एवं निलेश गायकवाड़ ने किया।

इस आयोजन के मुख्य प्रायोजक अभातेयुप कार्यकारिणी एवं सरगम टीम के सदस्य अर्जुन गर्व सोनी रहे, जबकि आतिथ्य-सत्कार का दायित्व तेरापंथ युवक परिषद वाशी एवं युवा साथी टीम द्वारा निभाया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय पदाधिकारियों की विशेष उपस्थिति रही, जिनमें अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष बी.सी. भलावत एवं संदीप कोठारी एवं वर्तमान पदाधिकारी शामिल थे। इसके अलावा सरगम टीम एवं अभातेयुप कार्यकारिणी के अनेक सदस्य भी उपस्थित थे।

स्थानीय स्तर पर तेरापंथी सभा वाशी के अध्यक्ष पंकज चंडालिया, भिक्षु महाश्रमण फाउंडेशन के अध्यक्ष कमलेश बोहरा, चातुर्मास समिति अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, मुंबई सभा मंत्री दिनेश सुतरिया, तेयुप पदाधिकारी, महिला मंडल वाशी की अध्यक्षा रेखा कोठारी तथा मंत्री सीमा मेहता की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम को सफल बनाने में सुशील कोठारी, शंकर कोठारी, महावीर सोनी, राकेश चंडालिया, नितेश बाफना और विनोद लोढ़ा का विशेष योगदान रहा। आभार ज्ञापन तेरापंथ युवक परिषद वाशी के कोषाध्यक्ष कैलाश गुंदेचा ने किया।

बोलती किताब

अठारह पाप

हमें विचार करना चाहिए कि दिन-रात में कभी कुटिलता का मौका आता है क्या ? आत्मचिंतन करें कि आज सवेरे उठने के बाद से लेकर शयन करने तक किसी के साथ कुटिलता तो नहीं की ? अगर कपटाई की है तो सोचें कि उसके बिना मेरा काम नहीं चल सकता था क्या ? बिना कपट किए अगर काम चल सकता था तो कपटपूर्ण व्यवहार मैंने क्यों किया ? क्यों नहीं मैंने सरलता का व्यवहार किया ? जहां सरलता है, वहां माया से होने वाला कर्मबंध नहीं होता । इसके विपरीत जहां कपट है, छलना है, झूठ है, वहां आदमी कर्म बंधन कर लेता है । जो आदमी माया, गूढ माया, असत्य वचन और कूट तौल-माप करता है, उसके तिर्यंच गति के आयुष्य का बंध हो सकता है । वह पशु की योनि में भी जा सकता है ।

आदमी को पैसे के प्रति आसक्ति से यथासंभव बचने का प्रयास करना चाहिए । लोग संस्थाओं को दान देते हैं और कई बार घोषणा यह करते हैं कि मैंने इतने का विसर्जन किया है । इसे विसर्जन नहीं कहना चाहिए । यह अनुदान है, आर्थिक सहयोग है, सामाजिक या लौकिक कार्य है । इसे विसर्जन की संज्ञा नहीं दी जानी चाहिए । विसर्जन तो शुद्ध त्याग होता है । जैसे-आपने संकल्प कर लिया कि अमुक दिन के बाद इतनी संपत्ति से ज्यादा अपने पास रखने का मुझे त्याग है । इसे इच्छा परिमाण व्रत कहते हैं । इसमें एक सीमा से अधिक संग्रह का त्याग हो जाता है ।

परिवार के वृद्ध व्यक्ति संतोष धारण कर लें कि जीवनयापन के लिए मुझे जो साधन सामग्री चाहिए, उतनी मिल रही है तो मैं संतोष रखूं । श्रावक के तीन मनोरथों में एक मनोरथ है-कब मैं अल्पमूल्य एवं बहुमूल्य परिग्रह का प्रत्याख्यान करूंगा । एक मकान से मेरा काम चल जाता है तो तीन मकान अपनी मिल्कियत में क्यों रखूं ? परिग्रह जितना कम हो उतना ही अच्छा है । धन-धान्य, हिरण्य, सुवर्ण, जमीन-जायदाद आदि के स्वामित्व से जितना मुक्त हुआ जा सके, उतना ही अच्छा है । साधु अकिंचनता की साधना करने वाला होता है ।

धन्य हैं वे आत्माएं और वे संतजन, जो अपने जीवन में अमोह की साधना करते हैं, राग भाव से मुक्त होने और वीतरागता के अभ्यास का प्रयास करते हैं । जैनधर्म में वीतरागता को बहुत ऊंचा स्थान दिया गया है । आदमी अपने जीवन का यह ध्येय बनाए कि उसे वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ना है । जैनधर्म के नमस्कार महामंत्र में भी वीतरागता केन्द्रीय तत्व है । हम नमस्कार महामंत्र का जप करें, साधना करें, अभ्यास करें, जिससे हमारे जीवन में वीतरागता पुष्ट हो । हम आत्मालोचन करें, अनुप्रेक्षा करें, अनुचिंतन करें कि हम कितने वीतराग भाव की ओर अग्रसर हो रहे हैं ? कितना वीतराग भाव हम आत्मसात कर सकते हैं ? वीतरागता बढ़ती है तो हमारी साधना पुष्ट होती है । वीतरागता पुष्ट न हो तो साधना की कोई खास निष्पत्ति नहीं आ सकती । साधु हो या श्रावक, सभी वीतरागता की दिशा में आगे बढ़े ।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

पृष्ठ 3 का शेष

लोभ को पराजित...

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि हर व्यक्ति को जीवन में एक लक्ष्य अवश्य धारण करना चाहिए। बिना लक्ष्य का जीवन उस नौका के समान होता है, जिसमें छिद्र हो जाए — वह नौका डूब जाती है। उसी प्रकार लक्ष्यविहीन व्यक्ति भी संसार में भटकता रहता है। हमारा लक्ष्य ऊँचा और स्पष्ट होना चाहिए। लक्ष्य ऐसा हो जिसे प्राप्त कर लेने के बाद कुछ भी पाना शेष न रहे। वह लक्ष्य है 'परमार्थ का लक्ष्य', परम को प्राप्त करने का लक्ष्य। परमार्थ को सामने रखने वाला व्यक्ति सदैव उदात्त अवस्था में रहता है और जीवन को उन्नत करता जाता है। साध्वी सरस्वतीजी ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए अपनी सहयोगी साध्वियों के साथ गीत का संगान किया। साध्वी परमयशाजी ने भी अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत का संगान किया। साध्वी केवलयशाजी ने गुरुचरणों में अपनी भावनाओं को अर्पित किया। तेरापंथ कन्या मण्डल ने अपनी प्रस्तुति की। अणुव्रत समिति-अहमदाबाद के अध्यक्ष प्रकाशचंद धींग ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। एमजी शाह ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

पृष्ठ 2 का शेष

राग-द्वेष को प्रतनु...

राग-द्वेष की भावनाओं से मुक्ति हो जाए तो आदमी वीतरागता के पथ पर अग्रसर हो सकता है। जब राग समाप्त हो गया तो द्वेष स्वतः समाप्त हो जाता है। राग-द्वेष से मुक्ति का प्रयास भी एक बड़ी साधना हो सकती है। प्रेक्षा ध्यान में प्रियता और अप्रियता के भावों से मुक्त रहने की साधना होती है। राग, द्वेष और स्नेह — ये भयंकर पाश हैं। इन पाशों से जो मुक्त होता है, वही आत्म-सुख में स्थिर रह सकता है। साधना का एक मूल तत्व है — राग-द्वेष का परित्याग। समता के भावों में वर्धमान रहना चाहिए। राग-द्वेष के भावों को प्रतनु करने का प्रयास करें, क्योंकि वर्तमान में पूर्ण वीतराग तो नहीं बन सकते, परंतु अनुकूलता-प्रतिकूलता की स्थितियों में समता और शांति बनाए रखें। भगवान महावीर की भांति समता की साधना में रहें। तीर्थंकर अध्यात्म जगत के परम पुरुष होते हैं — वे स्वयं ज्ञाता-द्रष्टा होते हैं। अर्हत पूर्णतया वीतराग होते हैं।आचार्य, महावीर वाणी का आश्रय लेते हैं, जबकि तीर्थंकर स्वयं वाणी-स्रोत होते हैं। आचार्य तीर्थंकरों के प्रतिनिधि होते हैं। जिसने राग-द्वेष को जीत लिया, वह केवलज्ञानी बन गया। जिसने मोह को जीता, वह वीतरागी बन गया। हम तेरापंथ धर्मसंघ, आचार्य भिक्षु से संबंधित हैं। भगवान महावीर और आचार्य भिक्षु में सहज और अद्भुत समानताएँ हैं। आचार्य भिक्षु को महावीर का अवतार कहा जा सकता है। वे समता और शांति के प्रतीक रहे। हमारे धर्म संघ में अब तक दस आचार्य हो चुके हैं। आचार्य धर्मसंघ के नियंता होते हैं। हमारे संघ में एक ही आचार्य की परंपरा है जो निरंतर प्रवर्धमान है। सबके आचार-विचार, सिद्धांत और संघीय मान्यताएं एक समान हैं। शिष्य भी एक ही आचार्य के होते हैं। यह संघ साधना का माध्यम बन जाता है। आगम वाङ्मय अत्यंत गरिमापूर्ण है — उसमें गहन तत्त्वज्ञान और सिद्धांत निहित हैं। हमें निरंतर आगम का स्वाध्याय करते रहना चाहिए। समय का सदुपयोग करें — स्वाध्याय भी आत्मा की एक खुराक है। राग-द्वेष के जाल को काटकर आत्म-साधना में आगे बढ़ने का प्रयास करें। आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के उपरान्त साध्वीवर्याजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि दुनिया में शक्ति और वीर्य का अत्यधिक महत्व है। चाहे ज्ञान हो, साधना हो या लोच — प्रत्येक के लिए शक्ति आवश्यक है। अन्तराय कर्म का क्षयोपशम आवश्यक है। प्राण शक्ति हमारे जीवन का आधार है। सहनशक्ति के बिना हम शारीरिक अस्वस्थता को भी नहीं झेल सकते। हमें शक्ति-संपन्न बनना है ताकि आत्मकल्याण कर सकें। समणी रोहिणीप्रज्ञा जी ने अपनी हृदयोद्गार व्यक्त किए। उपासिका लीला सालेचा ने अपनी भावनाएं प्रकट की और लक्ष्मण गोगड़ ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

परम विजय प्राप्ति के लिए मोह को जीतना हो लक्ष्य : आचार्यश्री महाश्रमण

पालड़ी, अहमदाबाद।
24 जून, 2025

महान यायावर आचार्य श्री महाश्रमण जी पश्चिम अहमदाबाद तेरापंथ भवन से विहार कर पालड़ी क्षेत्र में गौतम चौधरी के बंगले पर पधारे। अमृत देशना प्रदान करते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि शास्त्रों में परम विजय की बात कही गई है। एक योद्धा यदि समरांगण में दस लाख शत्रुओं को भी जीत लेता है और दुर्जेय संग्राम में विजयी हो जाता है, तो यह एक बड़ी बात अवश्य है, परंतु यह परम विजय नहीं है।

शास्त्रकार कहते हैं कि जो अपनी 'एक आत्मा' को जीत लेता है, वही परम विजेता कहलाता है। अपने आप को जीतना कठिन कार्य है — अपने क्रोध, अहंकार, माया, लोभ का क्षय कर देना और घातिकर्म का नाश कर देना एक महान उपलब्धि है। जैन दर्शन में 8 कर्म बताए गए हैं, जिनमें मोहनीय कर्म को कर्मों का राजा कहा गया है। इस कर्म को जीत लेना मानो एक गहरी घाटी को पार कर लेने जैसा है।

हिंसा की प्रवृत्ति और असद्भाव से मनुष्य हिंसक अपराध की ओर चला जाता है। अतः मोह को जीतना हमारा मुख्य लक्ष्य बनना चाहिए, जिससे परम विजय प्राप्त करना सहज हो सकता है।

दुनिया में कभी-कभी युद्ध की स्थिति भी उत्पन्न हो जाती है। ऐसे समय में यदि कोई बड़ा देश निष्पक्ष भाव से दोनों पक्षों को समझाए, तो युद्ध की स्थिति टल सकती है और समस्या का समाधान भी निकल सकता है। बुद्धिमत्ता से अनेक समस्याओं का हल संभव है। इस संसार में बुद्धिमत्ता का बड़ा महत्व है।

जैन दर्शन में अनेकांतवाद की बात आती है, जहाँ आग्रह की भावना नहीं होनी चाहिए। गुरुदेव तुलसी के समय, सन् 1985 में संत लोंगोवाल और राजीव गांधी के बीच समझौता हुआ था। साधु समाज में भी यदि कोई मतभेद उत्पन्न हो जाए, तो बहुश्रुत या वरिष्ठ साधुजन उसका समाधान कर सकते हैं। आज विश्व में तनाव की स्थिति है, परंतु मैत्री और शांति वार्ता से वह सुलझ सकती है। जो कार्य मैत्री से होता है, वह लड़ाई से नहीं हो सकता। थोपने की बजाय हृदय में उतारने का प्रयास करना चाहिए। डंडे की जगह ठंडक काम में लाई जाए। शांति के लिए यदि कड़ाई भी करनी पड़े, तो वह स्वीकार्य हो सकती है।

चतुर्दशी के उपलक्ष में पूज्यवर ने हाजरी का वाचन कराते हुए मर्यादाओं की व्याख्या करते हुए प्रेरणाएँ प्रदान कीं। साधुपन आजीवन का विषय है — पंच महाव्रत और साधुपणा अंतिम समय तक सुरक्षित रहे। आचार्यश्री की अनुज्ञा से मुनि ऋषिकुमारजी, मुनि रत्नेशकुमारजी व मुनि केशीकुमारजी ने लेखपत्र का वाचन किया। आचार्यश्री ने तीनों संतों को दो-दो कल्याणक बक्सीस किए। तदुपरान्त उपस्थित चारित्रात्माओं ने अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि हमारे धर्मसंघ में एक नेतृत्व है, जिसके कारण धर्मसंघ विकास की ऊँचाइयों को छू रहा है। साधु-साध्वियाँ और श्रावक-श्राविकाएँ इस गौरव को और भी बढ़ा रहे हैं। हमें अपने गुरु के प्रति असीम आस्था रखनी चाहिए।

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने कहा कि जिस व्यक्ति के पास जीवन जीने की कला होती है, उसका जीवन सार्थक हो सकता है। आचार्य श्री महाश्रमण जी यहाँ जीवन जीने की कला सिखाने पधारे हैं। वे सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति और मैत्रीभाव की शिक्षा दे रहे हैं।

मुख्यमुनिश्री महावीरकुमार जी ने कहा कि इस संसार में जरा और मरण का वेग बढ़ता जा रहा है, जिससे व्यक्ति दुखी हो रहा है। इससे मुक्ति का उपाय धर्म ही है। धर्म ही द्वीप है, शरण है, गति और प्रतिष्ठा है। आज पालड़ी में 'घर बैठे गंगा' आई है, इसका आध्यात्मिक लाभ उठाएं। पूज्यवर के स्वागत में गौतम चौधरी, अरिष्टनेमि व समीक्षा चौधरी तथा चौधरी-बोथरा परिवार की बहनों ने गीत प्रस्तुत किए। अहमदाबाद चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के मंत्री विजयराज सुराणा ने अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

दसवां बोल : कर्म आठ

1. ज्ञानावरणीय कर्म	5. आयुष्य कर्म
2. दर्शनावरणीय कर्म	6. नाम कर्म
3. वेदनीय कर्म	7. गोत्र कर्म
4. मोहनीय कर्म	8. अंतराय कर्म

अपनी आत्मा को न बनाएं दुरात्मा : आचार्यश्री महाश्रमण

कांकरिया-मणिनगर, अहमदाबाद।
25 जून, 2025

तपोनिष्ठ महायोगी आचार्य श्री महाश्रमणजी अहमदाबाद नगर का भ्रमण कराते हुए, अहमदाबाद के प्रख्यात कांकरिया लेक के किनारे स्थित वेद मंदिर प्रांगण में पधारे। वेद मंदिर के विशाल हॉल में अमीवर्षा कराते हुए, अमृतपुरुष ने फरमाया कि जैन वाङ्मय–आगमों में कहा गया है कि हमारी आत्मा यदि दुरात्मा बन जाए, तो वह सबसे बड़ा शत्रु बन जाती है।

कहा गया है कि एक दुश्मन यदि किसी व्यक्ति का गला काट दे, तो वह केवल उसका एक जन्म समाप्त कर सकता है, परंतु दुरात्मा बनी आत्मा तो उसके कई जन्मों को बिगाड़ सकती है। जो दुरात्मा होते हैं, वे जब मृत्यु के निकट आते हैं, तब सोचते हैं कि उन्होंने तो जीवन में केवल पाप ही पाप किए, अब आगे उनकी क्या गति होगी।

मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी आत्मा को दुरात्मा न बनाकर सदात्मा, महात्मा और संभव हो तो परमात्मा बनाने का प्रयास करे। मिथ्यात्व से आक्रांत आत्मा दुरात्मा हो सकती है। हमारे समाज में जहाँ सज्जन लोग मिलते हैं, वहीं दुर्जन भी मिल

सकते हैं। यदि किसी दुर्जन के पास विद्या, बुद्धि और ज्ञान है, तो वह उनका उपयोग विवाद बढ़ाने और समस्याएँ उत्पन्न करने में करता है। यदि उसके पास धन है, तो वह उसका अहंकार करता है, और यदि शारीरिक बल है, तो उसका दुरुपयोग दूसरों को पीड़ित करने में करता है।

इसके विपरीत, यदि सज्जन के पास विद्या है, तो वह दूसरों को भी ज्ञान देने का प्रयास करता है। उसके पास धन है, तो वह दान करता है, और यदि शारीरिक बल है, तो वह दूसरों की सेवा करता है। संसार में संत पुरुष भी मिलते हैं, जिनके दर्शन अपने आप में पावन होते हैं। साधु तो चलते तीर्थ होते हैं। सज्जनों की संगति करें, ज्ञान और उत्तम संस्कारों को अपनाएं।

धर्म के दो रूप होते हैं – पूजा-उपासना और आचरणात्मक। वीतराग की आज्ञा को स्वीकार कर, उनके वचनों को आचरण में लाएं। चाहे जैन हों या अजैन, सभी को अच्छा मनुष्य बनना चाहिए। सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति यदि जीवन में आ जाएं, तो मनुष्य का जीवन सुंदर बन सकता है। जीवन में ज्ञान और चारित्र का निरंतर विकास होता रहना चाहिए। आज कांकरिया-मणिनगर क्षेत्र के वेद मंदिर में आगमन हुआ है। साध्वी रामकुमारीजी लगभग दस वर्षों से इस क्षेत्र में प्रवासरत हैं। वे वयोवृद्ध साध्वी हैं। उनके चित्त में सदैव समाधि बनी रहे। उनके साथ की साध्वियाँ सेवा करते हुए ज्ञान का विकास करती रहें।

साध्वी रामकुमारीजी की सहवर्ती साध्वी आत्मप्रभाजी ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। कई महीनों बाद गुरु सन्निधि में मुनि धर्मरुचिजी गुरुदर्शन को पहुंचे तो आचार्यश्री अपने से रत्नाधिक संत की अगवानी में पहुंचे व नीचे विराजकर वंदना की मुद्रा में सुखपृच्छा इत्यादि की।

स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष चंपालाल गांधी, जिगीसा पींचा, मुमुक्षु हनुमानमल दुगड़ ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। स्थानीय ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला की ओर संकल्पों की भेंट गुरुचरणों में अर्पित की गई। तेरापंथ कन्या मण्डल ने गीत का संगान किया। संतोषदेवी बरड़िया ने भी गीत का संगान किया। तेरापंथ समाज कांकरिया-मणिनगर तेरापंथ समाज ने भी सामूहिक रूप से गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
07 जुलाई - 13 जुलाई, 2025

जीवन में प्रखर बने योग साधना : आचार्य श्री महाश्रमण

अमराईवाड़ी।
26 जून, 2025

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी कांकरिया मणिनगर क्षेत्र से विहार कर अमराईवाड़ी पधारे। मार्ग में कांकरिया तेरापंथ भवन में विराजित वयोवृद्ध 'शासनश्री' साध्वी रामकुमारी जी एवं स्थान स्थान पर श्रावक समाज को दर्शन देते हुए युगपुरुष सिंघवी भवन प्रांगण में पधारे। युगदृष्टा ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि भोग, रोग और योग — ये तीन ऐसे शब्द हैं, जिनके पीछे पीछे 'ओग' लगा है। दुनिया में भोग भी चलता है। पांच इंद्रियां हैं, जो पदार्थों का भोग करती हैं। दो शब्द हैं — काम, भोग। श्रोत्रेन्द्रिय और चक्षुरिन्द्रिय को कामी बताया गया है। शेष तीन इंद्रियां भोगी होती हैं। हमारी ये पांच इंद्रियां ज्ञानेन्द्रियां हैं। पांच कर्मेन्द्रियां — हाथ, पांव आदि — भी होती हैं।

ज्ञानेन्द्रियों से हमें ज्ञान प्राप्त होता है। कान से सुनते हैं और सुनकर ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। आंख से देखकर भी ज्ञान प्राप्त हो जाता है। नाक से सूंघकर गंध का ज्ञान होता है। जीभ से स्वाद लेने से रस का ज्ञान होता है। स्पर्शनेन्द्रिय से छूकर ठंडे-गर्म का ज्ञान हो जाता है। ये इंद्रियां ज्ञान की इंद्रियां हैं, तो भोग का भी माध्यम बन सकती हैं।

भोग और रोग से ऊपर की चीज है योग। योग से हम संयम की साधना करें। सम्यक ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना करें। भोगों पर आदमी संयम रखे। कई व्यक्ति भूख से मरते हैं, तो कई खाकर खराब हो जाते हैं। 'खायो घाटी, हुयो माटी।' भोग है, तो रोग भी शरीर में पैदा हो सकता है। हमें संयम, तप आदि योग-साधना और आध्यात्मिक साधना पर ध्यान देना चाहिए।

चौरासी लाख जीव योनियों में संज्ञी मनुष्य जन्म कितना महत्वपूर्ण है। इस जीवन का धर्म के संदर्भ में लाभ उठाएं। जो धर्म की साधना इस मानव देह में की जा सकती है, उतनी अन्य योनियों में नहीं मानी गई है।

यदि धर्म प्राप्त हो जाए और कोई उसे छोड़कर भोग में लग जाए, तो वह आदमी अपने घर में लगे कल्पवृक्ष को उखाड़कर धतूरे के बीज का वपन करता है, चिंतामणि रत्न को फेंक कर कांच के टुकड़े इकट्ठे करता है, उत्तम हाथी को बेचकर गधा खरीदता है। ऐसे व्यक्ति नासमझ होते हैं। धर्म बहुत ऊंची चीज है। हमारी देव, गुरु और धर्म के प्रति गहरी आस्था होनी चाहिए। संकट आ जाए, संकट कटे या न कटे, पर धर्म को नहीं छोड़ना चाहिए। अहिंसा, संयम और तप रूपी धर्म का फल अच्छा होता है।

संप्रदाय का अपना मूल्य है। यदि संप्रदाय को शरीर मान लें, तो धर्म उसकी आत्मा है। उसे अंतिम समय तक नहीं छोड़ना चाहिए। संन्यास धर्म प्राप्त हो जाए, और उसे जीवन भर पाल लिया जाए, तो वह बड़ी सफलता की बात है। गृहवास में रहते हुए भी धर्म का जीवन जिएं।गृहस्थ वेश में रहने वाला व्यक्ति केवलज्ञानी की स्थिति को भी प्राप्त कर सकता है। गृहस्थ वेश में भी साधुपन आ सकता है। अणुव्रत के अच्छे नियमों से गृहस्थ जीवन अच्छा हो सकता है।

हमारे जीवन में योग-साधना प्रखर बने। खान-पान में संयम रखें। जैन हो या अजैन, सभी 'गुडमैन' बनें।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि मनुष्य जन्म जिसे प्राप्त हो गया, उसने बहुत बड़े सौंदर्य को प्राप्त कर लिया। धर्म मनुष्य ही कर सकता है। मनुष्य में विवेक-चेतना जागरूक होती है। मनुष्य अपनी शक्तियों का प्रयोग करे। सिद्ध अवस्था को प्राप्त कर जीवन को सुफल और सफल बनाएं।

पूज्यवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष नवरत्नमल चिप्पड़, सज्जनलाल सिंघवी, मेवाड़ तेरापंथ मण्डल के अध्यक्ष गणेश पगारिया ने ने अपने उद्गार व्यक्त किए। तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों ने गीत का संगान करते हुए संकल्पों का उपहार प्रस्तुत किया तो आचार्यश्री ने समुपस्थित युवकों को संकल्पों का त्याग कराया। सिद्धेश्वरी माता धाम-महीरंगपुर के अर्जुनभाई जीवाजी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। स्थानीय ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

तेरापंथ महिला मण्डल व तेरापंथ कन्या मण्डल ने स्वागत गीत का संगान करने के उपरान्त आचार्य प्रवर को त्याग की बगिया भेंट की। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमणजी : अहमदाबाद प्रवास

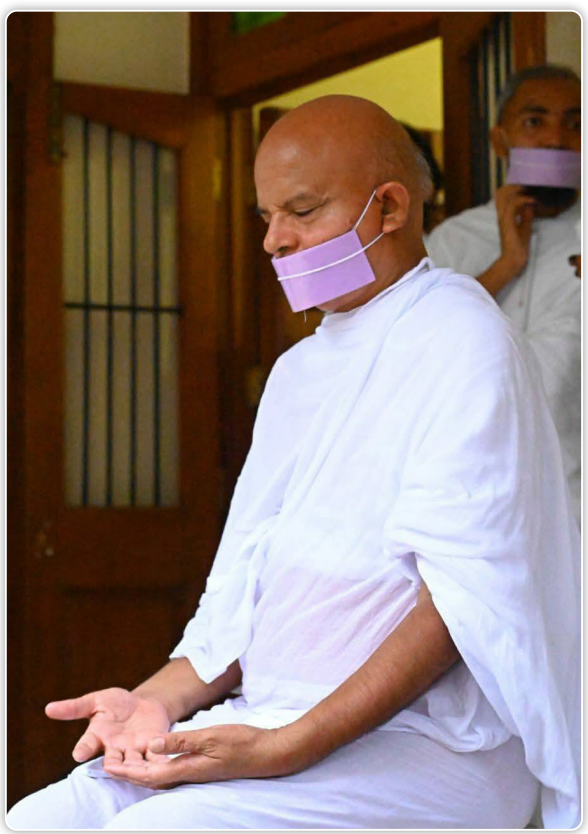

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।